चरित्र चित्रण

पूज्य श्री ए. नागराज जी के बहुआयामी व्यक्तित्व के कुछ संस्मरण

प्रथम कृतज्ञता दिवस

कार्तिक पूर्णिमा, 27 नवंबर 2023

मानव तीर्थ, किरीतपुर, छ. ग.

Scanned with AnyScanner

संकल्पना के मुख्य अंश

कृतज्ञता दिवस पर प्रकाशित होने जा रही पुस्तक के स्वरूप एवं उस से बाबा के आचरण व चरित्र का चित्रण को प्रस्तुत करने के प्रयास के क्रम में यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है।

बाबा के साथ विगत वर्षों में कई जिज्ञासुओं, विद्यार्थियों एवं समाज के भिन्न भिन्न आयाम से जुड़े व्यक्तियों ने दर्शन को समझने, जीने, व्यवहार में लाने मैं समय लगाया। इसी दौरान बाबा के सान्निध्य में रहते हुए, बाबा से संवाद, व्यवहार करते हुए, बाबा के आचरण, चरित्र, व्यवहार करने के तरीके आदि को देख पाए एवं उस से प्रेरणा पाई। बाबा से हुए संवादों में जिज्ञासु जान पाए किस प्रकार से उनके भीतर के प्रश्न उभरने से लेकर मध्यस्थ दर्शन उपलब्ध होने तक और फिर विकल्प के लोकव्यापीकरण के लिए बाबा ने क्या क्या पुरुषार्थ किया। मध्यस्थ दर्शन वांगमय के अलावा बाबा के चरित्र और उनकी अनुसंधान यात्रा भी हम सब के भीतर उत्साह और प्रेरणा का प्रसव करती ही है।

इसी आशय से इस पुस्तक के लिए लेखों के लिए आवेदन है। हम सबने बाबा साथ रहते हुए, मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन अभ्यास करते हुए, संवाद दिव्यपथ पढ़ते हुए या ऑनलाइन विडिओ देखते हुए किसी ने किसी तरीके से बाबा का चरित्र, उनका व्यवहार, जीने का तरीका ही देखा या कल्पनाशीलता पूर्वक चित्रित किया। इन्ही सब स्मृतियों को, प्रेरणाओं को एक क्रमबद्ध तरीके से लिखने से पढ़ने वाले विद्यार्थी , जिज्ञासु की कल्पना मैं भी वैसी ही प्रेरणा और चित्रण हो पाए तो इस पुस्तक का आशय सफल होगा। इस पुस्तक का उद्देश्य मात्र बाबा के चरित्र, अनुसंधान की यात्रा, विकल्प का उदय, एवं बाबा से प्राप्त दिशानिर्देश के माध्यम से बाबा के चरित्र को प्रस्तुत करना ही है, इस से भिन्न इसका कोई उद्देश्य नहीं है।

पुस्तक को अभी तीन भाग में रखा गया है 1. अनुसंधान 2. चरित्र चित्रण 3. बाबा से प्राप्त दिशा निर्देश।

लेखकों से आशा है उपरोक्त भाव को ध्यान मैं रखते हुए, कम से कम 2 पन्ने का एक लेख लिखने का प्रयास करें। लेख क्रमबद्ध हो व बाबा के किस व्यवहार, आचरण या चरित्र के किस भाग को दर्शाता है यह पढ़ने से समझ आना चाहिए। लेखकों के सुविधा से लिए विषय क्या क्या हो सकते हैं, निम्नलिखित हैं,

- अनुसंधान
- अनुसंधान की पृष्ठभूमि
- अनुसंधान के पूर्व यात्रा
- अनुसंधान के लिए प्रेरणा
- अनुसंधान के लिए प्रश्न
- समाधि
- संयम के लिए पृष्ठभूमि
- संयम की सफलता
- मध्यस्थ दर्शन का उदय और विकल्प का निर्णय
- संयम के पश्चात समाधान समृद्धि का मॉडल
- लोकव्यापीकरण के लिए प्रयास
- वांगमय रचना
- बाबा के चरित्र का वर्णन (स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्यव्यवहार)
- बाबा के व्यवहार का वर्णन
- बाबा द्वारा दायित्व और कर्तव्य का पालन व उस से प्राप्त प्रेरणा
- उत्पादन
- समाज में भागीदारी
- परिवार व्यवस्था में भागीदारी
- शिष्यों को समझाने (दर्शन) के लिए अपना तन, मन, धन नियोजन

Scanned with AnyScanner

- बाबा से प्राप्त मार्गदर्शन, दिशा निर्देश व जिम्मेदारी (व्यक्तिगत, संस्थानगत, व्यक्ति समूह में आदि)

उपरोक्त विषय लेख को एक दिशा देने के अर्थ में सांकेतिक ही हैं, इन्ही विषयों के भीतर अनेक विषय लेखकों के मन में आ ही सकते हैं, जिस पर लिखने पर वह स्वतंत्र हैं। आशा यही है लेख पढ़ने से बाबा के चरित्र, उनके अनुसंधान, उनकी यात्रा से सभी को प्रेरणा मिले तभी इस पुस्तक का उद्देश्य सफल होगा।

क्योंकि यह पुस्तक एक 5 साल की प्रक्रिया है, जिसमे लेखकों से आशय है की हर वर्ष उनसे प्राप्त लेखों में अधिक रचनात्मकता, गुणवत्ता मिलती रहेगी व सभी पुस्तक को सफल बनाने में अपना भरपूर योगदान देंगे।

धन्यवाद,

चरित्र चित्रण टीम

मार्गदर्शक – श्री साधन भट्टाचार्य

संपादक – श्री योगेश शास्त्री

संकलनकर्ता - श्री रविकांत मणि
श्री जिगर रावल
श्री हिमांशु बहुगुणा
श्री सूर्यकांत अग्रवाल

रचना सहयोग – श्रीमती सुवर्णा शास्त्री

श्रीमती कल्पना संचेती

Scanned with AnyScanner

प्रस्तावना

1. चरित्र चित्रण क्यों?

पूज्य बाबाजी के चरित्र चित्रण की आवश्यकता क्यों? - उच्च शिक्षा में मध्यस्थ दर्शन की विषय वस्तु के साथ (अनुसंधानकर्ता) का परिचय भी प्रस्तुत करना आवश्यक है। (अनुसंधानकर्ता) पू. बाबाजी का चरित्र अध्ययन शोध में आ जाने से मध्यस्थ दर्शन की वस्तु व्यावहारिक, समझने योग्य, जीने योग्य, और समझाने योग्य स्वीकार होती है। आचरण प्रमाण - अजागृत रहते हुए भी जागृति के प्रमाण कैसे पहचाने गए यह व्यावहारिक उदाहरणों से स्पष्ट हो सके। पूज्य बाबाजी चारों आयाम जैसे अनुभव प्रमाण के उदाहरण, विचार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण और व्यवसाय प्रमाण विकल्प रूप में कैसे है यह विश्लेषण हो सके।

परिवार मानव के रूप में प्रमाण – पूज्य बाबाजी परिवार में व्यवस्था दृष्टि से भागीदारी प्रमाण – मध्यस्थ दर्शन की रोशनी में परिवार एक व्यवस्था होने की अवधारणा बोध कैसे होता रहा यह उदाहरणों के साथ चरित्र चित्रण।

समाज मानव के रूप में प्रमाण - पूज्य बाबाजी समाज में व्यवस्था की दृष्टि से, प्रचलित मानव परंपरा में समाज एवं समाज एक व्यवस्था होने की अवधारणा का बोध कैसे होता रहा यह उदाहरणों के साथ चरित्र चित्रण।

प्रकृति मानव के रूप में प्रमाण - पूज्य बाबाजी प्रकृति में व्यवस्था की दृष्टि से प्रकृति की वर्तमान स्थिति में सहअस्तित्व सहज प्राकृतिक वैभव को, प्रकृति एक व्यवस्था है, होने की अवधारणा को कैसे बोध कराते रहे यह उदाहरणों के साथ चरित्र चित्रण।

2. कृतज्ञता दिवस के अवसर पर यह नमूना पुस्तिका प्रकाशन एक संकल्प के रूप में है।

2024 से 2028 में यह कार्य पूरा करने का क्रमशः प्रयास है। जिसमें पूज्य बाबाजी के जीवन चरित्र का database तैयार करना, प्रमाणों को चिन्हित करना और अभ्यास के रूप में विचार, व्यवहार, कार्य अभ्यास की पहचान करते हुए शिक्षा की विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत करना।

3. कृतज्ञता दिवस 2023 के अवसर पर एक नमूना पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। जिसमें कुछ लेख संकलित हुए हैं। हम सभी लेखकों को धन्यवाद देते हैं, उन्होंने हमें ये लेख समय पर उपलब्ध कराए।

Scanned with AnyScanner

अनुक्रमणिका

वात्सल्य मर्यादा के स्रोत (सुश्री शारदा शर्मा)	1
अनुसंधान का उपकार (श्री साधन भट्टाचार्य)	3
मध्यस्थ दर्शन-विकल्प स्वरूप में अस्तित्व सहज अभिव्यक्ति (श्री सोम त्यागी)	7
स्वयं के प्रति विश्वास का प्रत्यक्ष रूप (श्री अजय जैन)	10
परिवार मानव के प्रमाण (श्रीमती मीना गाड़ोदिया)	12
अध्ययन एक उत्सव (श्रीमती अनीता शाह)	14
अनुसंधान और विकल्प (श्री राकेश, श्रीमती प्रियंका गुप्ता)	16
प्रेरणा और मार्गदर्शन (श्री राकेश, श्रीमती प्रियंका गुप्ता)	25
समाधान की निरंतरता (श्री हिमांशु दुग्गड़)	28
मार्गदर्शन के अधिकारी (श्री बालमुकुंद)	31
करुणा का भाव (श्रीमती विधि)	33
न्यायकारी ध्यानाकर्षण (श्रीमती विधि)	35

Scanned with AnyScanner

वात्सल्य मर्यादा के स्रोत

- सुश्री शारदा शर्मा

जब से मैं 6-7 वर्ष की थी तब से मैंने पिताजी को जैसा देखा है वैसा लिख रही हूँ।

मैं माताजी और पिताजी को काफी श्रम करते हुए देखती थी। पिताजी रात्रि में 14 से 15 घंटे साधना करते थे और दिन में सारा समय हमारे साथ व्यतीत करते थे। पिताजी का ज्यादा सोने का अभ्यास नहीं था मात्र 4-5 घंटे ही सोते थे। दिन का जो कार्यक्रम होता था वो बहुत ही अच्छा होता था। माताजी - पिताजी सुबह साढ़े तीन बजे मंदिर के पीछे जो कुटिया थी उसी के सामने नर्मदा नदी थी जिसमें बारहों महीने पानी रहता था। उसमें पहले स्वयं नहाते थे और फिर उसके बाद हम लोगों को भी उठाकर नहला देते थे। उसके बाद हम सभी लोग चाय पीते थे। उन दिनों इतनी ठण्ड रहती थी कि हर वक्त आग की आवश्यकता होती थी।

दिन में पिताजी हम लोगों को ले कर जंगल जाते थे, हम लोगों को कंद और फल खिलाते थे और खुद भी खाते थे। जंगल से लौटते समय माताजी पिताजी अपने सिर पर लकड़ी लाते थे और हम सभी भाई-बहन भी शौक से 1-1 लकड़ी रख लेते थे, बड़ा ही मज़ा आता था।

अमरकंटक में कोई भी पिता अपने बच्चों को समय नहीं देते थे और न ही उनके साथ खेलते थे। आस-पास के सभी बच्चे हमारे यहाँ ही आते थे और पिताजी हम सभी लोगों के साथ खेलते थे।

हम जब बड़े हुए तो पिताजी ने हमें बताया कि वो पहले कहाँ थे और क्यों यहाँ अमरकंटक आये। पिताजी ने हमें बताया कि उनका जन्म कर्नाटक के हासन जिले में अग्रहार गाँव में वेदमूर्ति परिवार में हुआ था। उस गाँव के सभी परिवारों में सुबह-सुबह वेद ध्वनि सुनाई पड़ती थी। जैसे-जैसे बड़े हुए तो स्कूल जाने की बात हुई पर उनका मन स्कूली शिक्षा में नहीं लगता था। उनका मन गाय चराने, गाँव घूमने में ही लगता था। रूढ़िवादी परम्परा को वे नहीं मानते थे जिसके कारण परिवार के बड़े बुजुर्गों की भाव भंगिमा बदलने लगी तो उन्होंने निश्चय किया कि वेद का अध्ययन करना चाहिए। घर पर रह कर की वेद वेदांत का अध्ययन किया उससे भी उनको संतुष्टि नहीं मिली। पिताजी के कुछ प्रश्न थे जिनका उत्तर उन्हें न तो परिवार से मिला और न ही समाज से। ये प्रश्न थे-

1. ब्रह्म सत्य से जगत व जीव की उत्पत्ति मिथ्या कैसे ?
2. ब्रह्म ही बंधन व मोक्ष का कारण कैसे ?
3. शास्त्र प्रमाण या प्रणेता प्रमाण ?

इन सब के साथ एक प्रश्न और मन में आया कि नोट-वोट गठबंधन से जनादेश या जनप्रतिनिधि कैसा ?

परिवार वालों ने कहा कि तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर गुरूजी के पास मिलेगा। परिवार वाले उन्हें श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य श्री चंद्रशेखर भारती जी के पास ले गए। पिताजी ने उन्हें गुरूजी के रूप में स्वीकार किया। गुरूजी से भी अपने प्रश्नों को पूछा तो गुरूजी ने कहा कि तुम नर्मदा के किनारे जाओ और साधना करो, वहीँ तुम्हें सारे प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे। माता-पिता और गुरूजी की आज्ञा सर्वोपरि था। पिताजी बताते हैं कि उन्होंने सोचा की गुरूजी से तो आज्ञा मिल गयी है अब माता-पिता से आज्ञा लेना है। एक दिन साहस कर माता-पिता से बोले - गुरूजी का आदेश है कि मैं नर्मदा किनारे जाकर साधना करूँ। इसके लिए आप लोगों की आज्ञा चाहिए। माँ ने कहा कि जब हम मर जायेंगे तो जाना। कुछ एक वर्ष बाद ही माँ की मृत्यु हो गई और उसके छः महीने बाद पिताजी की भी मृत्यु हो गई। मृत्युपरांत होने वाले सारे कर्मों को एक वर्ष वहीं रहकर पूरा किया। उसके बाद उन्होंने नक्शे में देखा कि अमरकंटक नर्मदा का किनारा भी है और उद्गम भी। उन्होंने अमरकंटक जाने का निश्चय किया और पत्नी से कहा कि आप यहीं अपने माता-पिता के पास रहो और मैं अमरकंटक साधना करने जाता हूँ। अमरकंटक घनघोर जंगल है और आप वहां नहीं रह पायेंगी। आप यदि मेरे साथ चलते हो और किसी दिन मुझे वहाँ शेर खा लिया तो आप क्या करोगी? मेरी माँ ने पिताजी से कहा कि तुम्हारा गणित ही गलत है, हो सकता है शेर आप से पहले मुझे ही खा जाये? माता-पिता ने आपसे विवाह कर दिया है, दुःख हो या सुख हो मैं तुम्हारे साथ ही चलूंगी।

Scanned with AnyScanner

पिताजी बताते हैं कि उनके पास एक पेंसिल फैक्ट्री थी जिसे उन्होंने अपने मित्र को सौंप दिया और माताजी के साथ दिसम्बर 1949 को ट्रेन से पेंड्रा रोड स्टेशन पहुँच गए। उस समय पेंड्रा रोड से अमरकंटक आने के लिए कोई साधन नहीं था इसलिए वहाँ से पैदल चलकर ही अमरकंटक पहुंचे। पिताजी बताते हैं कि उन्होंने सोचा कि इतनी दूर मैं तो पैदल चल लूँगा परन्तु माताजी कैसे चलेंगी इसलिए उन्होंने माताजी से पूछा कि आप 20 किलोमीटर पैदल चल लेंगी तो माताजी ने पूर्ण प्रसन्नता के साथ कहा की चल लूंगी। एक पेटी को पिताजी सिर पर रखे और एक पेटी को माँ ने सिर पर रखकर चलना शुरू कर दिया। पगडंडी जैसा रास्ता था और चढ़ाई भी थी। पिताजी बताते हैं कि माताजी 2-3 जगह गिर भी गई थी। अमरकंटक पहुँचते-पहुँचते रात हो गई थी। उस रात्रि रामबाई का धर्मशाला में विश्राम किये। सुबह उठे तो देखा कि चारों ओर जंगल ही जंगल है। 15-20 परिवारों का एक छोटा सा गाँव था। खाने को कुछ नहीं था। नर्मदा जल पीकर ही 4-6 दिन काम चलाये उसके बाद तीन वर्षों तक जंगल के कंद, पत्ते खाकर गुजारा किया। माताजी तो तीन वर्ष तो किसी से बात भी नहीं किया क्योंकि उन्हें हिंदी बोलना नहीं आता था, बाद में उन्होंने कामचलाऊ हिंदी बोलना सिख लिया था।

पिताजी बताते थे कि जीविकोपार्जन के लिए गांववालों ने उन्हें कुछ जमीन दिया था। पिताजी ने उस जमीन को खेती योग्य बनाने में बहुत श्रम किया और आस-पास के आदिवासियों ने भी काफी मदद किया। पिताजी हमें भी साथ में लेकर खेत जाते थे। हम लोग साथ में कुछ चना भी लेते थे। उस समय यहाँ पर कोदो, कुटकी व धान ही हुआ करता था। हम लोग बस यही सब खाते थे। मुझे तो बारंबार बस यही लगता था कि जो कोई नहीं किया वह मेरे माँ पिताजी कर रहे हैं। अमरकंटक का सन् 80 तक का समय बहुत ही अद्भुत था।

शुरू से ही मैंने देखा कि परिवार में दिखावा नहीं है। उस समय अमरकंटक में बहुत साधु-संत आते थे। वे लोग पिताजी से भी मिलने आते थे। पिताजी माताजी से बोलते थे कि आगन्तुकों को भोजन कराओ। मैं देखती थी कि माताजी थोड़ा भी विचलित नहीं होती थी। घर में जो रहता था उसी को बना कर खिला देती थी। इस ढंग से दिखावा तो था ही नहीं।

अमरकंटक में बारिश के मौसम में बहुत बारिश होती थी, चार महीने लगातार बारिश होती थी। एक महीने तक धूप ही नहीं निकलती थी। नदी में बाढ़ आ जाता था। हम लोगों को स्कूल जाने का बड़ा ही उत्साह रहता था तो पिताजी अपने कंधे पर बैठाकर हमें नदी पार कराकर स्कूल पहुंचा देते थे। वह सब बहुत पुलकित करने वाला होता था।

उस समय अमरकंटक मात्र 20-25 परिवारों का छोटा सा गाँव था। मेरी माँ को बहुत अच्छी हिंदी बोलना नहीं आता था, पिताजी हिंदी अच्छा जानते थे। माताजी पिताजी हमें अपनी मातृभाषा कन्नड़ नहीं सिखाये और हमलोगों से हिंदी में ही बात करते थे। पिताजी कहते थे कि कर्नाटक में मैं माताजी का संरक्षक था और अमरकंटक आने पर माताजी मेरी संरक्षक रहीं। सारी जिम्मेदारियां माँ के पास थीं। उस समय आवश्यकता भी सीमित थी और साधन भी सीमित था। पिताजी साधना में रहते थे और मेरी माँ ही हम लोगों को अपने साथ रखती थी।

सन् 66 में पिताजी को समाधि हुआ। उसके बाद उन्होंने संयम किया। संयम में अस्तित्व जैसा है वैसा ही समझ में आया। उस समय भी पिताजी में मैंने कोई चमत्कार नहीं देखा, जैसा पहले मैंने पिताजी को देखा था वो वैसे ही थे। संयम के बाद वो अपनी समझ को लिखते रहते थे, बाद में मुझसे भी लिखवाने लगे। उस समय यहाँ श्री एन. के. श्रीवास्तव जी आते थे उनसे भी लिखवाते थे। यह क्रम चलता रहा। सन् 1975 में पिताजी भिलाई जाने लगे। उस समय मैं वहीं पढ़ाई करती थी। उस समय भिलाई में 4-6 लोग आस्था विधि से पिताजी से जुड़े हुए थे। वे सब पिताजी की बात सुनते थे परन्तु अपनी तरफ से कोई जिज्ञासा व्यक्त नहीं करते थे। वे लोग ये तो समझते थे कि पिताजी कुछ नयी बात तो कर रहे हैं जो अभी तक किसी ने नहीं कही है। यह एक विकल्प तो है भले ही हम समझ नहीं पा रहे हैं।

पिताजी बस से, ट्रेन से यात्रा करते थे। सन् 87-88 में पिताजी IIT दिल्ली गए और वहां भी प्रबुद्ध लोगों से इस दर्शन की चर्चा किये। सन् 2000 के आस-पास अभ्युदय संस्थान (अछोटी) की स्थापना हुई। इस संस्थान को बनाने में राजन भैया, अंजनी भैया, धीरेन्द्र भैया, बी.आर. भैया, सोम भैया, मंजीत भैया और भी लोगों का तन-मन-धन लगा है। पिताजी ने अपना काफी समय इस संस्थान में लगाया है।

मुझे बड़ा ही गर्व होता है कि मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के प्रणेता की मैं बेटी हूँ। श्रम और सेवा मैंने अपने माताजी और पिताजी से ही सिखा है। पिताजी को मैं दिव्य मानव के रूप में देखती हूँ। पिताजी के सशरीर न होने का दुःख तो अभी भी बना हुआ है।

Scanned with AnyScanner

अनुसंधान का उपकार

- श्री साधन भट्टाचार्य

1. साधना की पृष्ठभूमि

2. साधना एवं समाधि (अमरकंटक)

2.1 समाधि का वर्णन

3. समाधि के पश्चात : शरीर अध्यास आने पर मनःस्थिति और संयम का निर्णय

4. संयम की प्रक्रिया

5. संयम में सफलता : मुख्य बिंदु

6. संयम की रोशनी में

a) भ्रमित संसार की समीक्षा

b) समाधि की समीक्षा

c) परंपरा से भिन्नता और विकल्प

1. साधना की पृष्ठभूमि :

अपने वेदमूर्ति मामाश्री से वेदांत का अध्ययन करते हुए कुछ जिज्ञासा हुई।

वेदांत में वर्णित है कि जीव (मन,बुद्धि,चित्त और अहंकार का सम्मिलित स्वरूप) के हृदय में ब्रह्म, आत्मा के रूप में बैठ जाता है। इससे जीव कर्म बंधन में आ जाता है। जब आत्मा पुनः ब्रह्म में विलय हो जाता है तो मोक्ष होता है। इस पर युवा नागराज जी के मन में कई प्रश्न उभरे। जैसे - 1) ब्रह्म आत्मा के रूप में जीव के हृदय में बैठ गया। इसी से जीव कर्म बंधन में आया। जब आत्मा (ब्रह्म) जीव के हृदय में नहीं बैठा था तो जीव कर्म बंधन में नहीं था। तो आत्मा (ब्रह्म) ही बंधन का कारण हुआ। ब्रह्म स्वयं बंधन का कारण और स्वयं मोक्ष का कारण कैसे हो सकता है? 2) ब्रह्म कर्म बंधन में आ रहा है अर्थात दूसरी जो वस्तु है माया वह ब्रह्म से बलवान है? इस प्रकार कई प्रश्न उभरे। इसे स्पष्ट करने के क्रम में तत्कालीन विद्वानों से मिलना हुआ। जिनमें से प्रमुख हैं श्रृंगेरी के तत्कालीन जगतगुरू स्वामी चंद्रशेखर भारती और रमण महर्षि। दोनों महानुभावों ने कहा कि "तुमको अनुभव करना होगा"। चंद्रशेखर भारती महाराज जी ने अनुभव के लिए नर्मदा नदी किनारे भजन करने का निर्देश दिया। उनके निर्देश से 31 दिसम्बर 1949 को सपत्नीक अमरकंटक पहुंचे।

2. साधना एवं समाधि (अमरकंटक)

<u>2.1 समाधि का वर्णन :</u> युवा नागराज जी अपने परिवार परंपरा में प्रचलित श्री विद्या उपासना पद्धति से साधना करते थे। इस पद्धति में क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति और ज्ञान शक्ति के जागरण का आश्वासन दिया गया है। अमरकंटक आकर इसी विधि से आगे की साधना का निर्णय लिया। यह कहा गया है कि ज्ञान शक्ति के जागरण होने पर संपूर्ण अज्ञात ज्ञात हो जाते हैं और संपूर्ण अप्राप्त प्राप्त हो जाता है। यह आश्वासन पतंजलि योग दर्शन में कह गए समाधि में होने वाले फल के जैसा ही है।

गुरुपूर्णिमा सन 1950 से साधना प्रारंभ किया। प्रारंभ में प्रातः 6 बजे से शाम को 6 बजे तक साधना का निश्चय किया। छः वर्षों के पश्चात यह समय प्रातः 2 बजे से दोपहर 2 बजे तक साधना करते रहे। तृतीय और अंतिम चरण में सायं 6 बजे

Scanned with AnyScanner

से प्रातः 6 बजे तक साधना करते थे। 1960 के दशक में साधना में प्रौढ़ता आई। गुरु पूर्णिमा 1966 में स्वयं में साधना समाधि की स्थिति को स्वीकारा।

2.2 समाधि : इस स्थिति में

a) मेरे "आशा, विचार और इच्छा चुप हो गए"।

b) "मैं हूं, यह बना रहा"।

c) "दिन के समय जब प्रकाश हो, पानी में डूबकर आंख खोलने पर जैसा दिखता है वैसा दिखता रहा। यह व्यापक वस्तु या ब्रह्म के नाम से प्रसिद्ध है"।

d) "देश (स्थान), काल (समय) और शरीर का भास - आभास समाप्त हो गया"।

e) "भूतकाल की पीड़ा और भविष्य का भय नहीं रहा"।

f) व्यापक वस्तु (ब्रह्म) के होने की पूर्ण स्वीकृति हुई।

g) "इस स्थिति को न तो सुख कहा जा सकता है न दुख"।

इस स्थिति को पतंजलि योग दर्शन में समाधि, आगम तंत्रोपासना पद्धति में ज्ञान शक्ति जागरण, ज्ञान मार्ग परंपरा में निदिध्यासन, और विभिन्न साधना परंपरा में अभ्युदय निःश्रेयस, निर्वाण, कैवल्य, मोक्ष आदि कहा गया है।

2.3 परंपरा में समाधि क्या है? :

1) ब्रह्मभूत प्रसन्नात्मा न शोचती न कांक्षति। सम सर्वेषु भूतेषु मदभक्तिम लभते परम।। गीता 18/54

2) भित्यते हृदय ग्रंथिः छित्यंते सर्वशंशायः क्षियांते चास्य कर्माणि तस्मीन दृष्टा परावरे।। मुण्डकोपनिषद 2/2/8।

3) योगश्चित्त वृत्तिः निरोधः।। योगदर्शन/समाधिपाद/2

4) तदा दृष्टुः स्वरूपे अवस्थानम।। योगदर्शन/समाधिपाद/3

5) तदेवर्थ मात्र निर्भासम स्वरूप शुन्यमिव। समाधिः। योगदर्शन/विभूतिपाद/3

3. समाधि के पश्चात :

शरीर अध्यास आने पर मनःस्थिति और संयम का निर्णय: यह बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है। इसमें समाधि के पश्चात जब शरीर अध्यास आता है तब समाधि स्थिति में सुख दुख से परे होने का अनुभव सब पर भरी पड़ता है। शरीर के प्रति आसक्ति या शरीर की आवश्यकता शून्य हो गई। किसी भी क्रिया में प्रवृत्ति नहीं रही। सब स्मरण में आ जाता है। जैसे: मेरा नाम क्या है? परिवार की स्थिति, भूतकाल और वर्तमान की सारी स्थितियां। मैं यहां क्यों आया? मेरे प्रश्न क्या थे? क्या उन प्रश्नों के उत्तर मिले? इसका उत्तर उन्हें मिला कि नहीं - प्रश्न का उत्तर नहीं मिला। प्रश्न फिर से खड़े हो गए ! समाधि के समय में यह सारे प्रश्न लोप (समाप्त?) हो गए थे अब वह फिर से प्रकट हो गए!!! कुछ नई स्थितियां या प्रश्न बने।

- समाधि स्थिति में जो अनुभव हुआ कि मैं हूं और ब्रह्म है। किंतु यह स्वीकृति नहीं बनी कि यह दोनों एक ही है ! यह भी स्वीकृति नहीं बनी कि यह दोनों अलग हैं।! अर्थात चार महावाक्यों से सहमति नहीं बनी।
- और तैतरीय उपनिषद में वर्णित सृष्टि के उत्पत्ति का सत्य (ब्रह्म से आकाश पैदा होता है, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी पैदा होती है) भी स्वीकृत नहीं हुआ।

Scanned with AnyScanner

- ब्रह्म और आकाश, ये दो निराकार वस्तु है, यह भी स्वीकृत नहीं हुआ।
- एक निराकार वस्तु (ब्रह्म) से दूसरी निराकार वस्तु (आकाश) पैदा हुई यह भी स्वीकृत नहीं हुआ।
- यह भी स्वीकृत नहीं हुआ कि: दूसरी निराकार वस्तु (आकाश) से साकार वस्तु वायु बनी। ऐसी स्थिति में उन्होंने यह शंका प्रकट की- या तो मुझे समाधि नहीं हुई है?? या समाधि साधना की अंतिम मंजिल नहीं है???

4. संयम की प्रक्रिया :

समाधि के पश्चात शरीर अध्यास आने पर कुछ दिन में यह निर्णय हो गया कि या तो "मुझे समाधि नहीं हुई है या समाधि साधना कि अंतिम मंजिल नहीं है"। इसके परीक्षण के लिए योग दर्शन में वर्णित संयम करने का निर्णय किया। "त्रयम एकत्र संयमः।" विभूतिपाद।।4।। समाधि में आशा, विचार और इच्छा शून्य हो जाते हैं अर्थात आशा, विचार और इच्छा में कोई भी इकाई नहीं रहती है। इस समय (समाधि की स्थिति में पहुंचकर) चित्त में संयम की वस्तु को या प्रश्नों को रखा जाता है। प्रश्नों का रखा जाना और उस पर की जाने वाली बौद्धिक प्रक्रिया का नाम संयम है। कुछ माह तक संयम करने के उपरांत "मुझे कई प्रकार की ध्वनि सुनाई देने लगी किंतु उसका अर्थ स्पष्ट नहीं होता था"। कुछ मास पश्चात बहुत से चित्र दिखने लगे। ये बहुत तीव्र गति से मेरे सामने से जाते रहे। उनका अर्थ स्पष्ट नहीं होता था। कुछ दिनों में ही वे सभी चित्र स्पष्ट होने लगे। जितने देर तक मैं चाहता था मेरे सामने बने रहते थे। इस प्रकार धीरे-धीरे पूरे अस्तित्व का अध्ययन किया। इस "अध्ययन बोध" के क्रम में व्यापक सत्ता में संपृक्त (डूबा हुआ, भीगा हुआ और घिरा हुआ) प्रकृति अनुभव में आया।

5. संयम में सफलता :

मुख्य बिंदु –

1) सत्ता (व्यापक वस्तु/ आकाश/ ब्रह्म/ शून्य/ निराकार/ पूर्ण/ परमात्मा/ज्ञान चेतना/ निरपेक्ष ऊर्जा) में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व है। यह सहअस्तित्व रूप में नित्य वर्तमान है।

2) अस्तित्व में प्रकृति की मूल इकाई परमाणु है, परमाणु स्वयं व्यवस्था के रूप में है परमाणु में १. गठनपूर्णता (जीवन पद/ चैतन्य पद/ अमरत्व) २. क्रियापूर्णता (समाधान/ जागृति) और ३. आचरणपूर्णता (गंतव्य/ प्रामाणिकता) होती है। अर्थात् जड़ परमाणु ही विकास पूर्वक चैतन्य पद में आता है।

3) चैतन्य जीवन में आत्मा, बुद्धि, चित्त, वृत्ति और मन अविभाज्य अंग हैं।

4) जीवन जागृत होने पर आत्मा, व्यापक वस्तु में प्रत्यावर्तन पूर्वक अनुभव संपन्न होता है। साथ ही बुद्धि, आत्मा में; चित्त, बुद्धि में; वृत्ति, चित्त में; और मन, वृत्ति में प्रत्यावर्तित रहते हैं।

5) भ्रमित मानव कर्म करने में स्वतंत्र और फल भोगने में परतंत्र होता है। यही अध्ययन पूर्वक जागृत होकर कर्म करने और फल भोगने में स्वतंत्र होता है।

6) जागृत मानव अखंड समाज और सार्वभौम व्यवस्था में जीने की मानसिकता तथा आचरण संपन्न होता है।

6. संयम की रोशनी में

<u>a) समाधि की समीक्षा :</u> समाधि में कुछ नए अनुभव हुए जो उसके पहले की स्थिति में (धारणा और ध्यान) नहीं हुए थे। समाधि की स्थिति में सारे प्रश्न लोप हो जाते थे। एक अलग प्रकार की तृप्ति भी हुई थी; जो शरीर अध्यास आने के बाद भी बना रहता था। किंतु शरीर अध्यास आने के बाद बहुत सारे पुराने सारे प्रश्न वापस खड़े हो गए और ऐसा लगा कि प्रश्नों

Scanned with AnyScanner

का उत्तर नहीं मिला। इसलिए संयम की आवश्यकता पड़ी। संयम करने के पश्चात "मैं स्वयं समाधि का दृष्टा हो गया"। इस दृष्टा पद से समाधि और संयम में हुए अनुभव में एक सामान्य तुलना कर सकते हैं।

१) संयम की स्थिति में व्यापक वस्तु में सभी इकाइयां डूबी, भीगी और घिरी हुई दिखती हैं। जबकि समाधि स्थिति में किसी इकाई का चित्रण नहीं रहता। इसलिए व्यापक वस्तु और इकाई का संबंध अस्पष्ट रहता है।

२) व्यापक वस्तु की इकाई में पारगामीयता और व्यापक वस्तु स्वयं निरपेक्ष ऊर्जा होना अस्पष्ट रहता है।

३) प्रकृति की मूल इकाई परमाणु होना, परमाणु स्वयं व्यवस्था होना, संपूर्ण अस्तित्व व्यवस्था के रूप में नित्य वर्तमान होना अस्पष्ट रहा।

४) इकाई में गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता और आचरणपूर्णता होना अस्पष्ट रहा।

५) गठनपूर्ण परमाणु (जीवन) में ही जागृति (क्रियापूर्णता) और आचरणपूर्णता होना भी अस्पष्ट रहा।

६) इकाई में चैतन्यता का मूल कारण व्यापक वस्तु, स्वयं चेतना होना अस्पष्ट रहा।

७) जीवन में स्व-अस्तित्व की स्वीकृति के साथ अनुभव होना स्पष्ट न होने के कारण व्यापक वस्तु स्वयं ज्ञान होना भी अस्पष्ट रहा।

८) जीवन ही दृष्टा, कर्ता और भोक्ता पद में होना अस्पष्ट रहा।

९) जागृत मानव की सभा ही संप्रभुता और प्रभुसत्ता होना अस्पष्ट रहा।

१०) स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य और वस्तुगत सत्य अस्पष्ट रहा।

११) अस्तित्व स्वयं सहअस्तित्व होना और नियतिक्रम में अस्पष्टता बनी रही।

१२) अध्ययन विधि से मानव जागृत होना और जागृति की परंपरा बनना अस्पष्ट रहा।

b) परंपरा से भिन्नता और विकल्प :

१) समाधि स्थिति में आशा, विचार और इच्छा चुप हो जाता था लेकिन जब शरीर अध्यास आता था तो पुनः आशा, विचार और इच्छा पूरी तरह क्रियाशील हो जाते थे। किंतु संयम में सफलता के उपरांत जो जागृति की स्थिति बनी वह निरंतर बना रहा।

२) समाधि के पश्चात सभी कार्यों से मन विरत हो गया किंतु संयम में सफलता के उपरांत व्यवहार, उत्पादन, विनिमय, सेवा, आदि सभी कार्यों में प्रवृत्ति बनी रहती है।

३) संयम के फल में न्यूनतम तीन पीढ़ी के परिवार में जीना और उत्पादन, विनिमय, न्याय सुरक्षा, स्वास्थ्य संयम और शिक्षा संस्कार ही सम्पूर्ण कार्यक्रम हैं यह स्पष्ट हुआ और जीने की प्रवृत्ति बनी।

४) सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सबके जीने योग्य और समझने योग्य समझदारी स्पष्ट हुई। इस आधार पर शिक्षा और व्यवस्था की वस्तु और विधि विधान स्पष्ट हुए।

५) प्राकृतिक, सामाजिक और बौद्धिक नियम स्पष्ट हुए।

Scanned with AnyScanner

मध्यस्थ दर्शन-विकल्प स्वरूप में अस्तित्व सहज अभिव्यक्ति
(समस्त रहस्य, अन्तर्विरोध एवं बाह्य विरोध से मुक्ति का शिक्षा सहज मार्ग)

- श्री सोम त्यागी

सभी साथियों को नमस्कार,

1) स्वयं में शंका -

कोरोना काल में एक दिन विचार आया कि मानव में जागृति का अथवा पूर्णता का मार्ग इतना कष्टकर क्यों है ? मानव के अलावा मिट्टी, पत्थर, वनस्पति, पशु-पक्षी सहज रूप में अपने आचरण की पूर्णता के साथ है और इस व्यवस्थित आचरण की परम्परा भी है, जो समग्र रूप में अस्तित्व में व्यवस्था के रूप में दिखाई देती है।

2) लक्ष्य व दिशा की स्पष्टता-

फिर इस बात पर ध्यान गया कि किसी परिवार एक बहन महिला गर्भवती बहन / महिला 9 माह तक कितने सारे परेशान करने वाले परिवर्तनों से गुजरती है, लेकिन वो स्वयं भी उत्साहित और रोमांचित रहती है साथ ही परिवार में भी उत्सव का वातावरण बना रहता है। यह सोचनीय है कि इतने सारे परेशान करने वाले परिवर्तनों के बावजूद परिवार में कोई भी परेशान नहीं होता। तो उत्तर मिला कि परिवार के सभी लोग परिवर्तनों की प्रक्रिया, प्रयोजन व फल (एक बच्चे का जन्म) से आश्वस्त रहते है, इसलिए परिवार में उत्सव बना रहता है।

अत: जब तक मानव जाति में जागृति रूपी (फल) की महिमा व उसकी प्रक्रिया (दिशा) परम्परा में स्थापित नहीं होती तब तक मानव के लिए जागृति पथ सहज नहीं होगा।

अभी तक उपलब्ध भौतिकवादी और अध्यात्मवादी विधि से उपलब्ध ज्ञान के आधार पर मानव में सभी आयामों में समाधान, परिवार में परस्पर तृप्ति पूर्वक जीना व समाज में अखण्डता एवं सार्वभौमता (एक धरती - एक परिवार - एक भविष्य) को साकार करने का भरोसा नहीं मिला है।

3) अभी तक के सभी प्रयासों को पूर्णता -

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) स्वयं में एक मौलिक अनुसंधान है और अभी तक ज्ञान के अर्थ में हुए सभी प्रयासों का पूर्णता प्रदान करता है।

धरती के सभी मानव में कल्पनाशीलता रूपी ताकत समान है।

अस्तित्व नियम पूर्ण है। सच्चाई, सत्य, नियम किसी देश, धर्म, जाति, या व्यक्ति का नहीं होता वह तो सार्वकालिक है, सार्वभौमिक, सार्वदेशिक है। हां, कोई व्यक्ति या समूह उस अस्तित्वगत सच्चाई को उद्घाटित करता है।

आदिकाल से मानव ने इस सच्चाई को पहचानने का प्रयास किया है व किसी आंशिकता में पहचाना भी है। मध्यस्थ दर्शन के माध्यम से शाश्वत सच्चाई को उसकी पूर्णता में अनुसंधान पूर्वक पहचानना संभव हो पाया।

इसी का प्रमाण है कि उपलब्ध ज्ञान को शिक्षा पूर्वक परिवार, समाज और व्यवस्था में प्रमाणित किया जा सकता है, ऐसा भरोसा बना है।

Scanned with AnyScanner

4) इस भरोसे का आधार -

यह सृष्टि किसने बनाई? यह कैसे बनी है? यह प्रश्न आदिकाल से मूल प्रश्नों में एक है। मध्यस्थ दर्शन के माध्यम से सृष्टि कैसे प्रगट है इसे परमाणु में विकास की यात्रा के रूप में समझा गया है। परमाणु कहां से आया तो ज्ञात होता है कि अस्तित्व में दो वास्तविकताएं मौलिक हैं, एक- असीम खाली स्थान जो कि खाली नहीं है बल्कि ऊर्जा स्वरूप है और दूसरी सीमित वास्तविकताओं से आरपार है, फलतः सभी इकाईयां ऊर्जित हैं। यह सृष्टि, इस ऊर्जा में ऊर्जित इकाईयों के रूप में है। ऊर्जा और इकाइयों का सहअस्तित्व हमेशा है इसी फलन में सभी इकाईयां व अवस्थाएं प्रगट हैं।

जड़ परमाणु में अंतिम परिवेशीय सक्रियतावश पदार्थ अवस्था का प्रकटन है। जड़ परमाणु में अंतिम व अंतिम से पहले परिवेश की सक्रियतावश प्राण अवस्था का प्रकटन है।

इसी क्रम में अंतिम, अंतिम से पहले व अंतिम से दूसरे परिवेश की सक्रियतावश एक जड़ परमाणु अस्तित्व सहज विधि से चैतन्य परमाणु में बदल जाता है, संक्रमित हो जाता है। इसे कहा कि गठनशील परमाणु विकास पूर्वक गठन पूर्ण अर्थात चैतन्य पद है। यही दर्शन का मौलिक अनुसंधान है.

गठनपूर्ण होते ही पुंजाकर रूप में होकर जीने की आशा अर्थात जीवन परमाणु में प्रधान रूप में प्रथम परिवेश 'मन' व्यक्त हुआ। मन के स्तर पर सृष्टि को पूर्ण रूप से समझा नहीं जा सकता इसलिए न समझ आने वाली सभी घटनाओं के प्रति रहस्य, कोई शक्ति की कल्पना और उसको मनाने, रिझाने के लिए आस्था का जन्म स्वभाविक है। कुछ लोग इन रहस्यों को समझने के लिए प्रयास किये तो चित्त, वृत्ति में विकारों और अर्थहीन कल्पनाओं ने तंग किया होगा ही।

ऐसे में चित्त - वृति को निरोध किया जाए, ये सारे प्रयास समाधि तक पहुंचे। ऐसी स्थिति जहां शरीर के सुख दुख से मुक्ति मिली। इस महिमा को मानव जाति ने स्वीकार और कुछ लोगों ने इस स्थिति को पाया भी।

इस प्रयास में यही मिला मैं शरीर नहीं हूँ। आत्मा नाम से कोई सच्चाई जिसे कुछ लक्षणों के आधार पर पहचाना गया लेकिन वस्तु रूप में आत्मा क्या है? कहां से आयी ? क्यों आयी? ऐसे कुछ प्रश्न बने रहे या इस बारे में कुछ मान लिया गया।

इसी प्रकार ईश्वर को भी कुछ लक्षणों से पहचाने का प्रयास हुआ लेकिन वस्तु रुप में ईश्वर क्या है और सृष्टि प्रकटन का सार्वभौम- तर्कपूर्ण- जीने के स्वरूप में सच्चाई उद्घाटित नहीं हुआ। सभी दर्शनों, धर्मों में उपरोक्त विषय में जैसा माना गया वह परिवार-शिक्षा-व्यवस्था में प्रमाणित हो नहीं हो पाया, अपेक्षा तो बने रहा.

इसी बीच मानव में तर्क विकसित होता गया और बहुत सारी मान्यताओं को गलत पाया। तर्क विकसित होने साथ-साथ विज्ञान युग विकसित हुआ और शिक्षा में तर्क प्रवाहित हुआ। इस प्रकार मानव जीवन का अंतिम परिवेश मन व्यक्त हुआ तो धर्म, आस्था विकसित हुई। अंतिम के पहला परिवेश वृत्ति व्यक्त हुआ तो विज्ञान युग आया लेकिन इस से भी मानव का जीना नहीं हुआ अर्थात परिवार शिक्षा व व्यवस्था में ज्ञान प्रमाणित होने का व्यवहारिक स्वरूप नहीं निकला.

कभी आदरणीय बाबा जी से मैंने जिज्ञासा किया कि यदि आप 500-1000 साल पहले आगए होते तो इस धरती पर इतना विनाश नहीं होता। इसका उत्तर आ. बाबाजी ने दिया मध्यस्थ दर्शन के इस धरती पर सफल होने के लिए पूर्व तैयारी आवश्यक थी।

1) धरती पर तर्क का विकास ताकि सामान्य जनमानस इस विश्वास को पा जाए कि सभी समझ सकते हैं।

2) धरती पर दूरसंचार के साधन- computer, internet आदि का होना ताकि धरती पर एक पारदर्शी व्यवस्था स्थापित हो सके। एक सार्वभौम व्यवस्था जिससे सभी का जीना सफल हो सके.

उपरोक्त दोनों उपलब्धियां होने के साथ ही मध्यस्थ दर्शन आ. नागराज जी के माध्यम से अवतरित हुआ क्योंकि यही क्रम - अनुक्रम है। जीवन परमाणु के अंतिम परिवेश मन अर्थात आस्था, फिर वृत्ति अर्थात विज्ञान युग। अब चित्त और बुद्धि के जागृत होने के लिए अनुभव मूलक विधि से प्रतिपादित अनुभवगामी पद्धति से अस्तित्व क्यों है? कैसा है? जीवन क्यों है? कैसा है? मानव क्यों है? कैसा है? को पहचाना जा सकता है।

Scanned with AnyScanner

इस प्रकार आप जीवन परमाणु के मध्यांश आत्मा जागृत होने से ज्ञान मानव परंपरा में प्रवाहित और प्रमाणित होने अर्थात परिवार समाज में अखंडता सार्वभौमता तक का रास्ता बना।

मध्यस्थ दर्शन के माध्यम से शिक्षा पूर्वक एक धरती - एक परिवार - एक भविष्य को साकार करने का रास्ता प्रशस्त हुआ है। यह पूरी मानवता के लिए उत्सव स्वरूप है।

ऐसे परम पुरुषार्थ के लिए श्रद्धेय श्री नागराज जी का बारम्बार नमन।

मैं, सोम त्यागी

विद्यार्थी, मध्यस्थ दर्शन

Scanned with AnyScanner

स्वयं के प्रति विश्वास का प्रत्यक्ष रूप

- श्री अजय जैन

बाबा जी से पहली मुलाकात – उनका अद्भुत आत्मविश्वास

मुझे आदरणीय डॉ सत्य जी ने किसी दोस्त के द्वारा संदेश भेजा कि आज गेस्ट हाउस में एक व्यक्ति आए है, मैं उनसे मिलने आ जाऊँ। जब मैं गेस्ट हाउस में पहुँचा तो मैंने बाबा जी को उनके रूम में अकेले पाया। मैंने सोचा था कि शायद सत्य जी किसी विज्ञान जगत के व्यक्तित्व से मिलने के लिए मुझे संदेश दिए होंगे। लेकिन आदरणीय बाबा जी की वेशभूषा देखकर मुझे लगा कि कोई आध्यात्मिक व्यक्तित्व के धनी है।

मैंने उनसे पूछा की आप यहाँ (आईआईटी में) किस लिए आए हैं? तो उन्होंने अपनी characteristic style में कहा कि मैं मानव जाति के सभी प्रश्नों के उत्तर के साथ हूँ। उनका आत्मविश्वास जबरदस्त था। पहले तो मैंने सोचा कि क्यों न मेकैनिकल इंजीनियरिंग का ही कोई सवाल पूछ लूँ, क्योंकि आदरणीय बाबा जी ने कोई विषय विशेष पर सवाल पूछने की सीमा नहीं लगाई थी (और मैंने यह भी सोचा कि यदि अहंकार है तो यह भी उत्तर न दे पाने की स्थिति में टूट जाएगा) लेकिन फिर कही मुझे लगा कि चूंकि आध्यात्मिक जगत के व्यक्ति प्रतीत होते है तो क्यों न कुछ आत्मा, परमात्मा से जुड़ा हुआ सवाल पूछा जाए।

मैंने उनसे पूछा कि क्या आप आत्मा, परमात्मा के बारे में बता सकते है, इस पर उन्होंने कहा कि यदि इन शब्दों से इंगित होने वाली वस्तु अस्तित्व में है तो इस पर बात हो सकती है। यह उत्तर बिल्कुल ही नए perspective के साथ था, कि यदि कोई शब्द है तो उससे इंगित होने वाली वस्तु भी होगी और उस वस्तु को समझा जा सकता है। उनका आत्मविश्वास मुझे छू गया।

बाबा जी के तर्क करने का अनूठा तरीका

बाबाजी के आईआईटी प्रवास के दौरान, कुछ प्रोफेसर्स उनके साथ कुछ समय के लिए बैठते और फिर यह कहकर कि कुछ काम निपटा कर पुनः आते है, लेकिन अधिकांशतः वापिस नहीं आते। इस सब के पीछे एक तो बाबाजी की क्लिष्ट हिन्दी भी एक कारण होता था, दूसरा उनकी बात को रखने का तरीका जो की परंपरागत विचारधाराओं से एकदम भिन्न था।

इसी क्रम में मैंने कुछ प्रोफेसर्स से इस बात को जानना चाहा कि आखिर वो बाबा जी के व्यक्तित्व से, जो की यह दावा कर रहे है की वो सब कुछ उत्तरीत कर सकते है फिर समय क्यों नहीं निकाल रहे है। इस पर एक प्रोफेसेर ने मुझसे कहा कि बाबाजी बहुत अहंकारी किस्म के व्यक्ति है, उनसे यह पूछने पर कि उन्होंने बाबाजी के बारे में ऐसा निष्कर्ष किस आधार पर निकाला, तो उन्होंने बताया की बाबा जी से यह पूछने पर कि उनके उत्तरों का आधार क्या है तो वह कहते है कि उनकी बात का आधार अस्तित्व है और मैं इसका प्रमाण हूँ। प्रोफेसेर साहब का कहना था की सामान्यतः कोई भी ज्ञानी व्यक्ति परंपरा को आधार व स्वयं को "मैं कुछ अधिक नहीं जानता हूँ " कह कर ही प्रस्तुत होता है, यही ज्ञानी व्यक्ति के लक्षण है।

जब मैंने यह बात बाबा जी को बताई तो उन्होंने कहा कि अपने प्रोफेसेर सर से पूछना कि जब वो अपना विषय पढ़ाते है तो क्या यह कह कर पढ़ाते है कि उनको नहीं आता है या यह कहकर पढ़ाते है कि उनको आता है। या मैं किस प्रोफेसेर से पढ़ना चाहूँगा जो यह कहे की उसे नहीं आता है फिर भी पढ़ाए या फिर उनसे जो कहे की वो अपने विषय के विद्वान है उनसे।

उत्तर बहुत साफ था, बाबा जी के तर्क के सामने उनकी बात को हाँ कहने के अलावा और कोई ऑप्शन रहता नहीं था। मैंने स्वाभाविक रूप से कहा की ज्यादा उचित तो यही है अपने विषय में विद्वान है उन्हीं से पढ़ना चाहेंगे। फिर बाबाजी धीरे से

Scanned with AnyScanner

पूछते है की क्या मैं जो कहता हूँ इसको बदलू या ठीक है, हमें यही कहना पड़ा कि आप जो स्पष्टता से अपने को प्रमाण का आधार बताते है यही उचित है।

ऐसे तर्क क्षमता के धनी थे हमारे बाबाजी, उनको शत शत नमन।

तुम सब कुछ समझ सकते हो, दूसरों में आत्म विश्वास को भर देना

कई बार ऐसा लगता था की क्या हम लोग सच्चाईयों को समझ पाएंगे तो बाबाजी कहते थे की मेरे जैसा अनपढ़ जब अस्तित्व को समझ लिया तो तुम जैसे होनहार बच्चे तो इसे बहुत जल्दी और अच्छे से समझ पाएंगे। और कई बार तो हम लोगों को सभा के सामने कि यह मेरे से भी अच्छी तरह से इस बात को व्यक्त करता है या समझता है ऐसा कह कर हमें प्रोत्साहित किया और खुद की उपस्थिति में सभा को संबोधित करने का अवसर दिया।

मैं अपने को धन्य मानता हूँ कि ऐसे व्यक्तित्व का सान्निध्य मिला व उन्होंने मेरे में एक विश्वास को पैदा किया।

Scanned with AnyScanner

परिवार मानव के प्रमाण

- श्रीमती मीना गाड़ोदिया

पूज्य बाबाजी और माताजी को स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। बाबाजी के साथ मैं कैसे जुड़ी और उनके सान्निध्य में मैंने उनको किस रूप में देखा उसको मैं लिपिबद्ध करने का प्रयास कर रही हूँ।

बाबाजी से मेरी मुलाकात पहली बार मिश्रा जी के घर तब हुई थी जब मैं नाड़ी दिखाने मिलाई गई थी। बाबाजी के साथ पहली मुलाकात में ही उनके आचरण में एक श्रेष्ठता दिखी जिसके कारण उनको देवतुल्य मानकर उनके साथ आस्था विधि से जुड़ गई। जैसे-जैसे उनके साथ व्यवहार बढ़ता गया मैं उनको एक पिता और एक गुरु के रूप में स्वीकारने लगी। मैंने बाबाजी का पहला शिविर नंदनी में किया था लेकिन कुछ भी समझ में नहीं आया था। उसके बाद बाबाजी के साथ मैं, मेरे पति (श्री अंजनी जी) और मेरा बेटा गोपाल आंवरी में कुछ दिन साथ रहे, वहाँ पर बाबाजी का भरपूर स्नेह मिला और ऐसा लगा कि कोई इतना ज्यादा स्नेह कैसे कर सकता है? बाबाजी के आचरण में मुझे देवत्व झलकने लगा, जिससे प्रभावित होकर मुझमें मध्यस्थ दर्शन को समझने की निष्ठा बढ़ी।

उसके बाद बाबाजी का शिविर हमारे घर समता कालोनी में हुआ। एक साथ पूरे परिवार ने तो शिविर किया। बाबाजी जब भी मुझसे पूछते थे कि कुछ समझ में आया या नहीं तो मैं इशारे से बता देती की कुछ भी समझ में नहीं आया। बाबाजी, इस बात से बिल्कुल भी निराश नहीं होते थे और हमेशा इस आशा से मेरे साथ मेहनत करते रहे कि आज नहीं तो कल मैं समझ ही जाऊँगी।

जीवन विद्या : एक परिचय का recording जब आंवरी में हो रहा था उस समय भी बाबाजी के साथ रहने का मौका मिला। धूप में बाहर ही बैठकर recording चल रहा था। धूप काफी तेज थी और हम सभी परेशान हो रहे थे परन्तु बाबाजी को कोई परेशानी नहीं हो रही थी, इससे मुझे यह समझ में आया कि जागृत व्यक्ति पर वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है और वो जीवन के भाव में जीते हैं।

बाबाजी हर संबंध का निर्वाह, बहुत अच्छे ढंग से करते थे इसको मैंने और मेरे श्रीमान् जी (अंजनी जी) ने बहुत अच्छे से देखा है। इस संदर्भ में एक घटना याद आती है-बाबाजी जब पंडरपुर जा रहे थे तो रास्ते में नागपुर में लकी भैया के घर जाना था लेकिन जा नहीं पाए। लौटते समय लकी भैया का पूरा परिवार रास्ते में ही बाबाजी का खूब आदर सत्कार किया तब बाबाजी ने उनको कहा की हम एक दिन आपके घर आएँगे। उसके बाद जब बाबाजी एक बार अभ्युदय संस्थान आये हो तो केवल भोजन करने के लिए लकी भैया के घर नागपुर गए। हम कभी सोच भी नहीं सकते हैं कि इस तरह भी संबंध का निर्वाह हो सकता है।

पूज्य बाबाजी और पूजनीया माताजी के बीच मैंने पति-पत्नी संबंध को मैंने एक मन, दो शरीर के रूप में देखा। माता जी बाबा जी को प्रतिदिन सुबह उठने के बाद और रात्रि सोने से पहले साष्टांग प्रणाम करती थीं। माताजी जब अस्वस्थ हो गयी और चलने में दिक्कत होने लगी तो बाबाजी खुद ही रोज उनके पास जाते थे और बोलते थे- हमारा पांव आपके पास।

एक बात और याद आ रही है, गुरु शिष्य संबंध को लेकर जो बाबाजी और मेरे श्रीमान जी में मैंने देखा। बाबाजी जो भी बोलते थे मेरे श्रीमान जी उसे पूरा करने में पूरी निष्ठा से लग जाते थे। एक बार मेरे श्रीमान् जी का शिविर था और उसी समय बाबाजी को भी operation कराने के लिए जाना था मेरे श्रीमान् जी का मन बाबाजी के साथ जाने का था बाबाजी इस बात को समझ गए और आप हमारे साथ ही जाओगे और मेरे साथ ही रहोगे। ठीक वैसा ही हुआ - बाबाजी और श्रीमान् जी का शरीर शांत लगभग साढ़े तीन महीने के अंतराल पर हुआ। पहले श्रीमान् जी का शरीर शांत हुआ और फिर बाबाजी का मुझे लगता है कि दोनों का आपस में खूब ज्यादा प्रेम था।

Scanned with AnyScanner

बाबाजी सभी का बहुत ध्यान रखते थे, आज मेरा बेटा गोपाल जो कुछ भी है वह भी बाबाजी का आशीर्वाद है। एक बार मेरे पाँव में घाव हो गया था तो बाबाजी ने सुबह-सुबह फोन करके मुझसे पूछा कि तुम्हारा पाँव कैसा है? बाबाजी का इतना स्नेह और प्यार मिला जिसे मैं कभी चुका नहीं सकती केवल एक चीज याद आता है कि बाबाजी के दर्शन को समझता है और जीता है।

उनके साथ अछोटी में खूब साथ रहना हुआ। बाबाजी का जीना इतना सरल था कि जो भी भोजन मैं बनाती थी, बाबाजी खूब खुश होकर खाते थे और साथ में तारीफ भी करते थे। सभी लोग आराम से आते थे और बाबाजी से मिलते थे कोई तामझाम नहीं था। जैसे हम घर में रहते हैं वैसा ही बाबाजी रहते थे। मुझे लगता है कि बाबाजी इस धरती के सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति थे। फिर भी कभी भी ये नहीं लगा कि बाबाजी हमसे बहुत दूर है। क्योंकि वे कोई भी विशेषता का आडंबर नहीं करते थे। आज बाबाजी सशरीर नहीं हैं पर उनके आचरण की यादें हम सभी के लिए जागृति क्रम में अग्रसर होने के लिए प्रेरणादायी हैं। बाबाजी को कोटि कोटि नमन।

Scanned with AnyScanner

अध्ययन एक उत्सव

- श्रीमती अनीता शाह

बाबा के व्यवहार का वर्णन या उनके द्वारा कर्तव्य एवं दायित्व का निर्वाह उससे प्राप्त प्रेरणा

श्रद्धेय बाबाजी के ज्ञान की स्वीकृति जिस क्षण से स्थिर हुई है तब से आज तक उनके द्वारा कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वाह से सतत प्रेरणा मिल ही रही है वही मेरे जीने का आधार है तब से कोई भटकाव, कोई किंतु परंतु, कोई शंका पैदा नहीं हुई है लगातार शोध एवं प्रयोग अभ्यास चल ही रहा है उसमें रीढ़ की हड्डी से पसीना भी निकलता है प्रसन्नता भी बनी रहती है ये अद्भुत बात है।

आज मैं जो भी सोचती हूं बोलती हूं करती हूं उसमें अधिकतम ये प्रयास रहता है कि जो मैंने बाबाजी के आचरण में देखा उनकी सोच में देखा, जो उनको बोलते सुना, जो उनको करते हुए देखा उसका अनुकरण अनुसरण करूं।

एक बार हम बहनें विद्यालय खुलने से पहले अमरकंटक गए थे हमारी क्लास चल रही थी तभी वर्षा बेटा जी जो दूसरे कमरे में मैच देख रही थी हमारे बीच से निकली बाहर जाने के लिए तब बाबाजी ने रोक कर पूछा "कितनी गोली हुई" हम सबको घोर आश्चर्य हुआ की बाबाजी को क्रिकेट का शौक है तो हम सबने पूछ ही लिया कि क्या बाबाजी आपको भी क्रिकेट अच्छा लगता है तो बोले नहीं बेटा मैं दुकान सजा कर रखता हूं।

तब से हर संबंधी जो विद्या को नहीं भी सुने है पर वो जो सुनते है करते है उनसे कैसे जुड़े रहने की प्रेरणा मिली।

एक बार बाबाजी अमरकंटक से अंजनी भैया जी को फोन में बोले हमारे साथ माताजी भी आ रही है टीवी ठीक है न रामायण देखने का जुगाड़ कर लेना माताजी को अच्छा लगता है।

वैसे ही माताजी अछोटी में थी पूर्णिमा का दिन था, माताजी कोई पूजा करते थे गाय को खिलाते फिर संस्थान वाले सभी सहयोगियों को कुछ खिलाते थे। बाबाजी पूरी जिम्मेदारी से मीना भाभीजी, अंजनी भैया से पूछते थे किचन में देखो सब तैयार है न, माताजी गौशाला जाएंगी कौन जा रहा है साथ में, पूजा की तैयारी हो गई न ..... जब तक माताजी का पूरा काम व्यवस्थित पूरा नहीं हो जाता था, बाबाजी बैठे रहते और पूरा ध्यान रखते थे।

इससे आज भी ये प्रेरणा बनी हुई है कि अपने साथ जो भी संबंधी है उनकी आस्थाओं का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है।

एक बार मेरे घर में ऊपर दूसरी मंजिल में थे, तीन दिन जब घर आते थे माताजी अछोटी से अमरकंटक जा रही थी घर के नीचे गाड़ी रुकी, बाबाजी बाहर निकलकर एक नीची खिड़की है, वहां से अपना पैर थोड़ा बाहर किए नीचे माताजी चरण स्पर्श किए। उनको बाबाजी के पैर छू कर ही जाना रहता था। तब बाबाजी बोले हम अपना पैर उनके पास पहुंचा देता हूं ये उनका अभ्यास है हम सहयोग कर देता हूं।

ये इतना प्रेरणादायी आचरण था जो मेरे चित्रण में चित्रित है जिससे मेरे संबंधी जन को मेरे से क्या अपेक्षा है उसे पहचानना और पूरा करना मेरा कर्तव्य है इस पर ध्यान बना रहता है।

विद्यालय शुरू होने से पहले बाबाजी का जो मार्गदर्शन मिला उसमें एक बात हमेशा स्मरण में रहती है कि माता पिता ने जन्म दिया पोषण संरक्षण किया बस उनके उस भाग को स्मरण में रखो उसके लिए कृतज्ञता, बाकी जो शेष है उसकी जिम्मेदारी स्वयं की।

एक बाबाजी का व्यवहार जो आज तक मेरे बच्चों के अंदर अंकित है श्रीमान जी के जाने के बाद जब बाबाजी मेरे घर आए तीन दिन के लिए तब सबसे पहले मेरे माताजी पिताजी से पूछे बिटिया जो कर रही है उससे आप संतुष्ट है हम यहां आता

Scanned with AnyScanner

हूं आपकी अनुमति है। फिर दोनों बच्चों को बुलाया और पूछा हम यहां आता हूं रहता हूं आपको अच्छा लगता है। आपकी माताजी जो काम कर रही है उससे आप खुश है।

बच्चे कई बार बोलते है कि आज भी ये सोच कर अच्छा लगता है कि बाबाजी ने हमको इतना महत्व दिया।

मुझे ये प्रेरणा मिली कि परिवार मानव होना क्या होता है जितने भी सदस्य है सबकी सहमति पूर्वक कार्य व्यवहार के निर्णय पूर्वक चलना ही परिवार मानव की पहचान है जो बाबाजी ने अमरकंटक में और जब हमारे घर आए दोनों जगह जी कर समझाया।

6 महीने का शिविर शुरू होने से पहले बोले बेटा अपने पराए से मुक्त हुए बिना अध्ययन नहीं होगा।

तब हम बोले बाबाजी अभी तो अपनेपन का फैलाव हो रहा है कितने लोग अब अपने लगने लगे है तब बाबाजी बोले बेटा अपनों को पराया कर दिए है।

ये बात समझ नहीं आई फिर पूछे बाबाजी अपने पराए की दीवार क्या होती है तब बाबाजी बोले कि "ये समझ नहीं सकते", "ये समझना नहीं चाहते" ये पराया करना है "सब समझना चाहते है", "सब समझ सकते है" ये सोच अपने पराए की मानसिकता से मुक्त करेगी।

तब खुद पर ध्यान गया कि जो भी संबंधी विद्या से नहीं जुड़ते कुछ और करते थे उनके प्रति परायापन ही था इसको बार बार जांचना हुआ तब ये बेडिया टूटी और सबके प्रति मानव जाति एक है, सब समझना ही चाहते है, सब समझ सकते है ये दृष्टि खुली।

उसी क्रम में पहले ऐसा भी हुआ कि हम बहनों ने सोचा कि विद्यालय में अध्यापिका जी के कपड़े ऐसे होने चाहिए, श्रृंगार नहीं करना चाहिए, जींस पहनना ठीक नहीं है बाबाजी के सामने लिस्ट ले कर गए पहले कड़क होकर देखे फिर खूब जोर से डांट पड़ी तुम बोलोगे क्या पहनना है क्या नहीं पहनना उनको जब समझ आएगा ठीक करेंगे।

तब से एक दृष्टि खुली रूप, पद, धन, बल, उम्र, भाषा, कपड़े, जाति के पीछे एक मानव है ये दिखने लगा तो न्याय पूर्वक नहीं जी पाने के कारण समझ में आए। न्याय कहां कहां छूटता था ये भी धीरे धीरे दिखने लगा।

बाबाजी के संपूर्ण ज्ञान का भास होने के बावजूद मेरे में उनका प्रभाव एक परिवार मानव के रूप में अधिक रहा इसलिए संबंधों के निर्वाह वाले आचरण का अनुकरण अनुसरण स्वाभाविक रूप में अधिक रहा उनसे मैंने परिवार मानव बनने की प्रेरणा ली उसी में अभी अध्ययन अभ्यास चल रहा है।

आज मैं ये कह सकती हूं कि अनुकरण अनुसरण का प्रमाण यह है कि पिछले 20 वर्षों की यात्रा में माता पिता (पुत्र-पुत्री), भाई बहन, गुरु शिष्य, मित्र-मित्र, पति पत्नी, साथी सहयोगी, व्यवस्था संबंध में दिन प्रतिदिन तृप्ति बढ़ रही है जब अनुभव होगा तो कितना सुखद होगा ये अनुमान होता है।

श्रुति, स्मृति में आज भी बाबाजी की हर लाइन स्थिर है चित्रण में उनका आचरण चित्रित है जो मुझे सही और गलत के बीच सही की पहचान कराता है जिम्मेदारी वहन करने की प्रेरणा देता है यही मेरा विश्वास बढ़ाता है, यही मेरी प्रसन्नता का आधार है।

Scanned with AnyScanner

अनुसन्धान और विकल्प

- राकेश, प्रियंका गुप्ता (बैंगलोर)

श्रद्धेय नागराज जी (१९२०-२०१६) को हम बाबाजी कह कर सम्बोधित करते थे। हमारा उनसे पहली बार मिलना २००४ में हुआ। उसके बाद संयोग वश हमारा अनेक बार उनसे मिलना हुआ। बाबाजी का व्यक्तित्व हमारे विश्वास का आधार बना, जिसके चलते हम उनका अनुकरण अनुसरण करने का प्रयास कर रहे है। श्रद्धेय बाबाजी ने साधना-समाधि-संयम पूर्वक अनुसन्धान किया, और अनुसन्धान पूर्वक हुई उपलब्धि - मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद को एक विकल्प के स्वरूप में प्रस्तुत किया। 'अनुसन्धान और विकल्प' शीर्षक से यह लेख वर्ष २००५ से २०१६ के बीच बाबाजी के साथ हुए हमारे संवादों पर आधारित है। यह अभी तक बना हमारा एक अनुमान है, जिसमें सुधार व परिमार्जन के लिए मध्यस्थ दर्शन के अन्य विद्यार्थियों द्वारा सुझाव अपेक्षित हैं।

बाबाजी का जन्म १९२० मै कर्नाटक प्रांत में एक वेद-परायण परिवार में हुआ था। उनके परिवार परम्परा में घोर श्रम, घोर सेवा और उच्च कोटि की विद्वता का अभ्यास रहा। परम्परागत श्रम और सेवा स्वीकार होते हुए भी विद्वता पर प्रश्न चिन्ह रहे। ज्ञान का रहस्य में होना उनको स्वीकार नहीं हुआ। विज्ञान का तर्क उनको स्वीकार हुआ। १९४० के दशक में, जब उनकी आयु २० वर्ष थी, दूसरे विश्व युद्ध की भीषण त्रासदी से सारा विश्व गुजर रहा था, इसके साथ भारत में आजादी के आंदोलन का अंतिम चरण और उसके बाद देश का विभाजन, ये सब परिस्थितियां और घटनाएं युवा नागराज जी के मानस में रही होंगी। साम्यवादी विचार उस समय परवान पर था, उनके मित्र सभी उस विचारधारा से प्रभावित थे। उस समय देश का संविधान भी गठित हो रहा था, उसमें भी कई विसंगतियां उनको साफ़ दिखती थी। परंपरागत रूढ़ियों, छुआछूत आदि उनको स्वीकार नहीं हुई। उन्होंने अपने परिवार परम्परा के सुर से सुर नहीं मिलाया तो उससे वहां लोग क्रोधित-व्यथित हुए और उनको वेद-वेदांत का अध्ययन करने का निर्देश दिया, जिसको उन्होंने स्वीकारा।

वेद विचार में ब्रह्म को सत्य, ज्ञान और अनंत स्वरूप बताया है, जीव जगत की उत्पत्ति ब्रह्म से ही होना बताया है, फिर जीवों के हृदय में ब्रह्म के ही आत्मा स्वरुप में होने का प्रतिपादन है, जीव के बंधन में आने की बात है। मोक्ष एक ऐसी स्थिति बताई गयी है जब जीव बंधन से मुक्त हो जाता है और आत्मा ब्रह्म में विलय हो जाता है। वेद विचार पर आधारित सभी साधना परम्पराओं में आत्मा के ब्रह्म में विलय होने को सर्वोच्च स्थिति बताया है। इस स्थिति को अलग अलग नामों से बताया गया है जैसे समाधि, मोक्ष, निर्वाण, कैवल्य, आदि- जो एक सर्वोच्च उपलब्धि है। लेकिन यह स्थिति रहस्यमय है, अनिर्वचनीय है इसको शब्दों में बताया नहीं जा सकता। कोई विरला ही इस स्थिति तक पहुँच सकता है, इसलिए इसको परम आदर्श बताया है। इसी सर्वोच्च उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए ही आदर्शवादी समाज और व्यवस्था की सारी परिकल्पना है। वैदिक विचार की सनातनी संस्कृति-सभ्यता इसी आधार पर टिकी हैं जिसमें चार वर्ण, चार आश्रम उनमें क्या करना है। क्या नहीं करना है इसके लिए उपदेश, शास्त्र आदि हैं।

वेद-वेदांत का पूरा अध्ययन करने के बाद बाबाजी में वेदविचार के ज्ञान को लेकर कुछ प्रश्न बने।

पहला प्रश्न ब्रह्म जो सत्य है, उससे उत्पन्न हुआ जीव-जगत मिथ्या कैसे है?

दूसरा प्रश्नः ब्रह्म ही बंधन और मोक्ष दोनों का कारण कैसे है?

तीसरा प्रश्न: - शब्द प्रमाण है, या शब्द का धारक वाहक प्रमाण है?

चौथा प्रश्नः (तत्कालीन परिस्थिति से) संविधान में राष्ट्र और राष्ट्रीयता का सही स्वरूप क्या है?

इस प्रकार अपनी जिज्ञासा, तर्क और ईमानदारी के साथ वे दृढ़ता से खड़े हो गए। तत्कालीन विद्वानों, वेद मूर्तियों और सम्माननीय ऋषि-महऋषियों के पास गए, लेकिन उनको वहाँ अपने प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला। वहाँ से उनको समाधि के लिए मार्गदर्शन मिला। इस तरह परम्परा से अपने प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलने पर उन्होंने अब अपने प्रश्नो के उत्तर स्वयं खोजने की जिम्मेदारी ले ली। समाधि हेतु साधना के लिए मन बनाया। अंततोगत्वा श्रृंगेरी के तत्कालीन शंकराचार्य चंद्रशेखर भारती

Scanned with AnyScanner

महाराज जी की आज्ञा से वे अमरकंटक में साधना के लिए अपनी पत्नी के साथ १९५० में आ गए। १९५० और १९६० के दशकों का अमरकंटक आज के अमरकंटक से बहुत भिन्न रहा। घोर जंगल के बीच वहां बहुत थोड़े से लोग रहते थे। बाबाजी ने आगम तंत्र उपासना पद्धति से साधना शुरू की। इस उपासना पद्धति की दीक्षा उनको अपनी माता जी से मिली थी। १९६० के दशक में उनकी साधना में प्रौढ़ता आयी। १९६६ में अपने समाधि की स्थिति में पहुँचने को स्वीकारा। इस तरह बाबाजी वेद परम्परा में बताई गयी "सर्वोच्च उपलब्धि तक पहुँच गए। समाधि की विचारशून्य स्थिति में उनके पास देश, काल और शरीर का बोध नहीं रहा। महीनों तक समाधि की स्थिति में वे प्रतिदिन १२ से १८ घंटे रहे। समाधि की स्थिति में प्रश्न विलय हो जाते थे किन्तु समाधि की स्थिति से बाहर आने पर, शरीर स्थान और समय का बोध होने के बाद, उनके प्रश्न यथावत बने रहे। शास्त्रों और बुजुर्गों के आश्वासन से भिन्न, समाधि में बाबाजी को अपने प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला। अतः उन्होंने निर्णय किया या तो समाधि में जान नहीं होता या उन्हें समाधि नहीं हुई है।

"मुझे समाधि हुई है, इसका प्रमाण क्या है?" समाधि का प्रमाण देने के लिए उन्होंने अग्रिम साधना पतंजलि विभूतिपाद के अनुसार संयम करने का निश्चय किया। समाधि हुए बिना संयम हो नहीं सकता और यदि संयम होता है तो समाधि की गवाही हो जायेगी, ऐसा उन्होंने निर्णय किया। पतंजलि योग सूत्र में संयम का उल्लेख है, जिसमें लिखा है- धारणा, ध्यान और समाधि इन तीन स्थितियों को एकत्रित करने से संयम होता है। उसमें कई तरह के संयमों का उल्लेख है, लेकिन वो सब उनको सिद्धि प्राप्त करने के लिए लगा। "मुझे सिद्धि नहीं चाहिए यह उनका निर्णय था। इसलिए उन्होंने स्व-विवेक से इस क्रम को उलटाया।

संयम के लिए पहले समाधि की स्थिति में आये। समाधि की स्थिति में उन्हें गहरे पानी में आँख खोलने पर जैसा प्रकाश दिखता है, वैसा दिखता रहा। यह क्या वस्तु था जो उनको समाधि की स्थिति में दिखता रहा, जिसे हम सशरीर देख नहीं पाते हैं? यह पूछने पर उन्होंने बताया "समाधि की स्थिति में जीवन शरीर से अलग रहता है। उस अवस्था में सत्ता (ब्रह्म) ही दिखता रहा" इस तरह, ब्रहम है, इसकी पहचान समाधि की स्थिति में उनको हो गयी। यद्दपि इसका सत्यापन वे अनुभव संपन्न होने के बाद ही किये हैं। आशा-विचार-इच्छा के चुप होने के बाद भी "मैं हूँ। इसकी भी उनको समाधि के स्थिति में पहचान हुई। आशा विचार इच्छा जब चुप थी तो देखने वाला कौन था? यह पूछने पर उन्होंने बताया- "समाधि की स्थिति में मुझे ज्ञान नहीं था- "कौन" देखता है। आज मैं अनुभव सम्पन्नता के साथ कह सकता हूँ, मेरी बुद्धि और आत्मा ही मेरी आशा विचार इच्छा की चुप्पी को देखने वाला था।" इस तरह शरीर से भिन्न चैतन्य वस्तु है, इसकी पहचान उनको समाधि की स्थिति में हुई। मैं केवल शरीर नहीं हूँ, यह मानसिक स्वीकृति उनके पास पहले से ही रही, समाधि में इसकी स्थायी रूप से पुष्टि हो गयी। "यह है" और "मैं हूँ" की यह पहचान शाब्दिक या तार्किक मात्र नहीं थी। इन दो वास्तविकताओं की पहचान के साथ उन्होंने आगे "ध्यान" की स्थिति को जोड़ा, "यह" और "मैं" क्या एक ही हैं, या ये अलग-अलग हैं, या एक से दूसरा पैदा हुआ है? इस प्रश्न को वे "ध्यान" में लाये। इस तरह समाधि के clean slate (पूर्व स्मृति और पूर्वाग्रहों से रिक्त स्थली) पर देश-काल से मुक्त या सर्वदेश-सर्वकाल के सन्दर्भ में मानसपटल (चित्त) पर एक नया लेख लिखे जाने का आधार उन्होंने बनाया। यहाँ से उन्होंने ध्यान के अर्थ में विचार को खोला। संयम काल में इस ध्यान के अर्थ में असंख्य permutation-combination में विचार हुआ, फिर धीरे-धीरे निष्कर्षात्मक विचार उनमें स्थिर होने लगा, और इस प्रकार उनका संयम काल में अध्ययन हुआ, व्यवस्था की मूल इकाई परमाणु का सूक्ष्म स्वरूप स्पष्ट हुआ.

चैतन्य इकाई के रूप में जीवन परमाणु का स्वरूप स्पष्ट हुआ। प्राण कोशिका, उनसे बनी रचनाओं का स्वरूप स्पष्ट हुआ जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव को स्वरूप स्पष्ट हुआ, अस्तित्व में प्रत्येक एक त्व सहित व्यवस्था और समय व्यवस्था में भागीदार है यह सूत्र स्पष्ट हुआ, सभी वस्तुओं का प्रयोजन, मानव का लक्ष्य, मानवीयता पूर्ण आचरण का स्वरूप स्पष्ट हो गया। प्रकृति में सब कुछ कड़ी से कड़ी अथवा सीढ़ी से सीढ़ी कैसे जुड़ा है, इसके स्पष्ट चित्रण उनमें स्वयंस्फूर्त उभर उभर के आने लगे। बुद्धि में इस अनुक्रम की अवधारणा बनी। जिसके पूरा होने पर, प्रमाणित होने के संकल्प के साथ आत्मा में सहअस्तित्व में अनुभव हुआ, सता में सम्पृक्त प्रकृति के स्वरूप में सहअस्तित्व अनुभव हुआ। इस अनुभव के आधार पर प्रमाणित होने के लिए धारणा बनी, समाधि, ध्यान, धारणा इस क्रम में एकत्र हुए और संयम सफल हुआ। सहअस्तित्व में अनुभव से उनमें एक पूर्ण संतुष्टि की स्थिति बनी अब मन का शरीर की और परावर्तन को जो रोका हुआ था, उसको खोल दिया, जिससे संवेदनाओं की पहचान, देश-काल-स्थान की पहचान इसके साथ जुड़ गयी, यहाँ संवेदनाओं को संज्ञानशीलता में नियंत्रित होता हुआ पाया गया। अनुभव जीने में प्रमाणित हो सकता है - यह सिद्ध हो गया। जिन प्रश्नों को लेकर उन्होंने अनुसन्धान किया था, वे सभी प्रश्न यहाँ उत्तरित हो गए,

Scanned with AnyScanner

पहला प्रश्नः - ब्रह्म जो सत्य है, उससे उत्पन्न हुआ जीव जगत मिथ्या कैसे है?

उत्तर: उनके अनुभव में आया कि ब्रह्म सत्य है और जगत शाश्वत है। अस्तित्व में प्रकटन है, उत्पति नहीं है। अस्तित्व सत्ता (ब्रह्म) में सम्पृक्त प्रकृति के स्वरूप में नित्य वर्तमान है.।

दूसरा प्रश्नः ब्रह्म ही बंधन और मोक्ष दोनों का कारण कैसे है?

उत्तर: भ्रम ही बंधन है। भ्रम मुक्ति ही मोक्ष है। जीवन द्वारा शरीर को जीवन मान लेना ही भ्रम है। मोक्ष (भ्रम मुक्ति) का प्रमाण मानव परम्परा में होता है.

तीसरा प्रश्न: - शब्द प्रमाण है, या शब्द का धारक वाहक प्रमाण है?

उत्तर: जागृत मानव प्रमाण है, जो अनुभव प्रमाण, व्यवहार प्रमाण और प्रयोग प्रमाण को प्रस्तुत करता है। शब्द से अस्तित्व में वस्तु इंगित होता है, जिसको मानव पहचानता है.

चौथा प्रश्न: (तत्कालीन परिस्थिति से) संविधान में राष्ट्र और राष्ट्रीयता का सही स्वरूप क्या है?

उत्तर: अनुभव मूलक विधि से जीते हुए मानव का आचरण निश्चित हो जाता है, जिसको उन्होंने मानवीयता पूर्ण आचरण स्वरूप में पहचाना। संविधान का आधार मानवीयता पूर्ण आचरण ही हो सकता है, जिससे राष्ट्र और राष्ट्रीयता का स्वरूप "दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था निकलता है.

इस तरह सहअस्तित्व में अध्ययन पूर्वक वे "दृष्टा पद" में स्थित हो गए। समाधि के बाद लगभग २ वर्ष बाबाजी ने संयम काल में अध्ययन किया, जिसके फलस्वरूप वे अनुभव संपन्न हुए। उनके कथन अनुसार- अनुभव होने के बाद आत्मा अभिव्यक्तिशील हो जाती है। दृष्टा पद ज्ञान को जीने में प्रमाणित करने के लिए आवश्यक योग्यता है। ज्ञान को जीने में प्रमाणित करने का ही नाम मानव चेतना, देव-चेतना और दिव्य चेतना है। अनुभव अपने में पूरा रहता है, प्रमाणित होना क्रम से होता है।

अपने अनुभव संपन्न हो जाने को उन्होंने अपनी साधना का फल नहीं माना। उन्होंने यह स्वीकारा कि यह सम्पूर्ण मानव जाति के पुण्य का फल है। मानव जाति सदा-सदा से इसी को चाहता रहा है। उन्होंने अपनी उपलब्धि को मानव जाति की अब तक की जागृति क्रम की यात्रा का अगला कदम बताया। इसलिए वे मानव जाति को इस उपलब्धि को अर्पित करने के लिए प्रवृत्त हुए.

बाबाजी ने परिवार में रहते हुए साधना की। साधना काल में वे स्वावलम्बन विधि से रहे। साधना काल में उनकी पत्नी ने एक अभिभावक जैसे उनका संरक्षण किया। बाबाजी अपनी साधना की सफलता का श्रेय माताजी को देते हैं। उन्होंने कई बार यह कहा है "माता जी यदि नहीं होते और मेरा साधना पूरा होता मैं - विश्वास नहीं करता।" परिवार में रहते हुए साधना करना इस अनुसन्धान की उपलब्धि के अनुकूल हो गया। अनुभव संपन्न होने के बाद उन्होंने परिवार में रहते हुए ही अनुभव को प्रमाणित किया। बाबाजी के जागृति के प्रमाण को उनके परिवार में जीने के स्वरूप के साथ ही पहचाना जा सकता है, बाबाजी के परिवारजन दशकों से इसके लिए पूरकता का निर्वाह किये हैं और आज भी कर रहे हैं.

समाधि तक की साधना उन्होंने पारम्परिक विधि से ही की। उन्होंने पाया कि साधना को लेकर जो परम्परागत ग्रंथों में लिखा है, वह सही है। समाधि के बाद संयम का डिज़ाइन उन्होंने स्वयं बनाया था। संयम में जो उनको ज्ञान हुआ, वह परंपरागत ज्ञान के आगे का है। सार रूप में अनुसन्धान पूर्वक बाबाजी द्वारा गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता और आचरणपूर्णता की पहचान हुई जिसका इस दर्शन से पूर्व परम्परागत ज्ञान में कोई उल्लेख नहीं है। अनुसन्धान पूर्वक प्राप्त मध्यस्थ दर्शन को बाबाजी ने विकल्प स्वरुप में प्रस्तुत किया है।

Scanned with AnyScanner

जिस प्रकार बाबाजी साधना किये वैसे हर व्यक्ति साधना, समाधि, संयम पूर्वक अनुभव तक पहुंचेगा ऐसा संभव नहीं है। हर व्यक्ति अनुभव तक पहुँच सके उसके लिए उन्होंने अनुभवगामी पद्धति या अध्ययन विधि तैयार की.

अनुभवगामी पद्धति का आधार इस बात में है कि (1) अनुभव को भाषा में बताया जा सकता है (2) हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है क्योंकि हर मानव में कल्पनाशीलता है और उसमें समझने की सहज अपेक्षा है। "अनुभव भाषा में बताया जा सकता है यह अभी तक वैदिक परम्परा में जो सोचा गया था, उससे भिन्न बात है समाधि को ही अनुभव माना था और उस अनुभव को अनिर्वचनीय बताया था। मतलब उसको शब्दों में नहीं बताया जा सकता। जबकि बाबाजी के अनुसार अनुभव ही दमदारी के साथ बताने योग्य बात है। "हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है यह भी अभी तक वैदिक परम्परा में जो सोचा गया था, उससे भिन्न बाल है। वहाँ यह माना था कि कोई बिरला, लाखों में कोई एक व्यक्ति ही अनुभव कर सकता है। जबकि बाबाजी के अनुसार हर मानव समझ सकता है। अनुभव कर सकता है, और अनुभव को जीने में प्रमाणित कर सकता है.

जो भी भाषाएँ प्रचलन में हैं, वे सभी मानव परम्परा में अभी तक जो सोचा है उसी अर्थ को इंगित करती है। मानव परम्परा ने अभी तक दो विधियों से सोचा है आदर्शवादी विधि से और भौतिकवादी विधि से इन दोनों विचारधाराओं से मानव का अध्ययन नहीं हो पाता है। ये दोनों विचारधाराएं मानव को एक प्रकार का जीव ही मानती है। जबकि मध्यस्थ दर्शन मानव को ज्ञान अवस्था की इकाई के रूप में पहचानता है। इन दोनों विचारधाराओं के विकल्प स्वरूप में उन्होंने अपनी समझ को प्रस्तुत किया और परिभाषा विधि का उपयोग किया। शब्द उन्होंने परम्परा से लिए और उन शब्दों को अपने अनुभव के आधार पर परिभाषित कर दिया। इस तरह अपनी समझ को पाँच सूत्रों में सूचित किया और उसको व्याख्या किया। ये पाँच सूत्र हैं (१) सहअस्तित्व, (२) सहअस्तित्व में विकास क्रम (३) सहअस्तित्व में विकास (४) सहअस्तित्व में जागृति क्रम (५) सहअस्तित्व में जागृति इसी सिद्धांत के आधार पर उन्होंने ४ दर्शन, वाद शास्त्र और संविधान को लिखा।

बाबाजी वेद-वेदांत के विद्वान थे। वे चाहते तो विगत के सूर्य को अपने ज्ञान के अनुसार व्याख्या दे सकते थे। किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने मध्यस्थ दर्शन को विकल्प स्वरूप में ही रखा। यदि वे पूर्ववर्ती सूर्य को नयी व्याख्या देते तो उससे वाद-विवाद ही होता, और जो ये नयी बात कहना चाह रहे हैं उस पर ध्यान नहीं जाता। बाबाजी ने आदर्शवाद और भौतिकवाद के विकल्प में मध्यस्थ दर्शन को रखते हुए भी इन दोनों विचारधाराओं का मानव जाति की जागृति हेतु योगदान के लिए कृतज्ञता को व्यक्त किया है। आदर्शवाद ने जो भाषा दी है उसी के शब्दों को नयी परिभाषा दे कर बाबाजी ने मध्यस्थ दर्शन प्रस्तुत किया है। भौतिकवाद में नापने तोलने की विधियां और दूरसंचार दिया है जो मानव उपयोगी है।

मानव विचार के आधार पर सभी कार्य करता है आदर्शवादी और भौतिकवादी विचारधाराओं पर चल के ही मानव आज जहाँ है, वहाँ तक पहुंचा है। इसमें कई उपलब्धियों भी हैं, और साथ में कई जगह काली दीवाल आ गयी है। धरती बीमार हो गयी है। इसी तरीके से ५० वर्ष और चले तो यह मानव के रहने योग्य नहीं बचेगी। इसलिए भौतिकवाद और आदर्शवाद के विकल्प को अपनाना अब अपरिहार्य है। आदर्शवाद या भौतिकवाद के continuation में मध्यस्थ दर्शन नहीं है। आदर्शवाद और भौतिकवाद की मूल मान्यताएं मध्यस्थ दर्शन से भिन्न है। मध्यस्थ दर्शन के विकल्प होने को भुला देने पर इससे इंगित अर्थ स्पष्ट नहीं हो सकता। यही कारण है बाबाजी हर सम्मलेन में, हर पुस्तक के आरम्भ में विकल्प क्यों और कैसे आया इसको स्पष्ट करते है।

उपसंहार

बाबाजी का अनुसन्धान कोई रहस्य नहीं है। वर्षों की साधना पूर्वक समाधि की स्थिति में प्रकृति के दृश्य का उनमें निरोध हुआ। केवल "यह है" और "मैं हूँ" बना रहा। विचार शून्य रहा। समाधि की स्थिति में महीनों रहने पर भी बुद्धि में अवधारणा नहीं बनी है, जबकि संगम में वृद्धि में अवधारणा बनी है। इसलिए समाधि और संयम में अंतर क्या है। यह हमारे लिए समझना आवश्यक है। समाधि विचारशून्यता है, पर संयम विचारशून्यता नहीं है। संयम में "यह है" और "मैं हूं के दो ध्रुव रहे और साथ में उन्होंने अपने प्रश्नों को ध्यान में लाया। इससे विचार आरंभ हो गया। बाद में प्रकृति के अन्य वस्तुओं को भी

Scanned with AnyScanner

ध्यान में लाया गया। ऐसे में मन का परावर्तन अभी भी रोका रखा गया। इस तरह संयम काल में brain के involvement के बिना ध्यान पूर्वक विचार हुआ है जो निष्कर्षात्मक जगह जा कर स्थिर हुआ है, जिसके अनुसार चित का स्वरूप बना है। जिसे बुद्धि ने समर्थन दिया है। इस तरह बाबाजी ने संयम काल में अध्ययन किया है, जिसके फलस्वरूप उन्होंने सहअस्तित्व में अनुभव किया है.

अनुभव संपन्न होने के बाद अनुभवमूलक विधि से उन्होंने यथार्थ जानकारी का भाषाकरण किया है। भाषा परम्परा से ली है, पर परिभाषा उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर की है। इस तरह उन्होंने अपनी समझ को दर्शन, वाद और शास्त्र स्वरूप में लिखा। यह समझ पूर्ववर्ती आदर्शवादी और भौतिकवादी आधारों से नहीं है, इसलिए उन्होंने इसे विकल्प स्वरूप में प्रस्तुत किया है। आदर्शवाद और भौतिकवाद के मानव के जागृति क्रम में योगदान के प्रति कृतज्ञता के साथ यह इन दोनों विचारधाराओं का विकल्प है.

इस लेख में बाबाजी की अनुसन्धान यात्रा और उनका अपनी उपलब्धि को विकल्प स्वरूप में रखने के सन्दर्भ में जैसा हमको अभी तक ग्रहण हुआ है, उसको हमने लिखने का प्रयास किया है। आशा है, यह प्रस्तुति उपयोगी होगी। इस लेख में जो त्रुटियां हैं, उनके सुधार के लिए आप हमारा ध्यानाकर्षण कराएंगे, यह अपेक्षा है। धन्यवाद।

इस लेख से संदर्भित बाबा जी के साथ हुए कुछ संवादों का उल्लेख:

समाधि की स्थिति का वर्णन

साधना के फल स्वरुप मुझे समाधि हुआ। समाधि में गहरे पानी में डूब कर आँखे खोल कर देखने में मधुरिम प्रकाश जैसा दिखता है, वैसा मुझे दिखता रहा। समाधि में मेरी आशा-विचार- इच्छा चुप रही, यह आंकलित हो गया। इसमें ज्ञान नहीं हुआ। फिर संयम में सत्ता में अनंत प्रकृति को भीगा हुआ देख लिया। समाधि में जो दिख रहा था, वह सता है यह स्पष्ट हो गया। समाधि के बाद ही संयम होता है।

- श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (जुलाई २०१०, अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2010/09/blog-post 24 html

प्रश्न: आशा-विचार इच्छा जब चुप थी तो देखने वाला कौन था?

उत्तर: समाधि की स्थिति में मुझे ज्ञान नहीं था- "कौन देखता है। आज मैं अनुभव-सम्पन्नता के साथ- कह सकता है, मेरी बुद्धि और आत्मा ही मेरी आशा-विचार- इच्छा की चुप्पी को देखने वाला था। समाधि की स्थिति में मुझे भूत और भविष्य से पीड़ा और वर्तमान से विरोध नहीं रही। समाधि के बाद संयम के बाद में अध्ययन पूर्वक दृष्टा पटा में स्थित हुआ, अनुभव-संपन्न हुआ।

- श्रद्धेय नागराज जी के उदबोधन पर आधारित (अनुभव शिविर २०१०, अमरकंटक)

https://madhyasthedarshan.blogspot.com/2010/02/blog-post_4511.html

समाधि के बाद संयम करने का निर्णय

प्रश्न: संयम काल में आपने गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता को कैसे अध्ययन कर लिया, जिसका परम्परा में कोई जिक्र नहीं था?

Scanned with AnyScanner

उत्तर: मेरे पास पहले से यह कोई विचार नहीं था कि मैं यह अध्ययन करूंगा। पहला मुद्दा यह है। संयम करने से पहले मेरे पास अध्ययन का कोई syllabus नहीं था। उससे पहले समाधि में मैंने अपने आशा, विचार, और इच्छा को चुप होते देखा था। ऐसे स्थिति में दिन में १२-१८ घंटे तक मैं ज्ञान होने का इन्तज़ार में रहता था। समाधि में ज्ञान हुआ नहीं। अब क्या किया जाए? समाधि में ज्ञान नहीं होता इसका अपने साथी, सहयोगी, और मित्रों को message देना है। पतंजलि योग सूत्र में लिखा है- यदि संयम सफल होता है, तो समाधि होने की गवाही हो जाती है। उसके आधार पर संयम करने के लिए मैंने अपने मन को तैयार किया।

संयम के बारे में शास्त्रों में जो लिखा था वह सिद्धि मात्र को प्राप्त करने के लिए है, ऐसी मेरी स्वीकृति हुई। सिद्धियों तो संसार को बुद्ध बनाने वालों को चाहिए। मुझे सिद्धि नहीं चाहिए यह मैंने स्वीकारा। शास्त्री में लिखा था धारणा, ध्यान, और समाधि इन तीनो को जब हम इस क्रम में एकत्र करते हैं तो संयम होता है। मुझ में यह अन्तःप्रेरणा हुई कि इस formula को उलटाया जाए। वैसा करने से शायद कुछ निकले जो इससे भिन्न होगा। क्या भिन्न होगा वही उसकी गवाही होगी। इस तरह मैंने समाधि, ध्यान, धारणा इस क्रम में इन स्थितियों को एकत्र करने का निर्णय किया। स्वयं पर विश्वास और दृढ़ता करने की प्रवृत्ति मुझ में पहले से ही थी।

- श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (जनवरी २००७, अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2008/08/blog-post_02.html

<u>सत्ता का स्वरूप</u>

प्रश्न: समाधि-संयम पूर्वक आपको सत्ता का स्वरूप कैसा दिखा?

उत्तर: समाधि की स्थिति में मुझे गहरे पानी में आँख खोलने पर जैसे प्रकाश दिखता है, वैसा दिखता रहा.

समाधि में मुझे सत्ता ही दिखता रहा, यह संयम में स्पष्ट हो गया। संगम में पता चला कि मैं समाधि में सत्ता को ही देख रहा था, समाधि के आधार पर ही संयम में अध्ययन करना बना.

श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (जुलाई २०१०, अमरकंटक

- https://madhyasth darshan.blogspot.com/2023/07/blog-post_31.html

<u>साधना के फल को मानव जाति को अर्पित करने का निर्णय</u>

प्रश्न: आपकी सफलता मानव जाति के पुण्य से घटित हुई, यह निर्णय आपने कैसे ले लिया?

उत्तर: इसलिए क्योंकि मानव जाति में "शुभ की कामना है, पर शुभ घटित नहीं हुआ है। शुभ के लिए प्रयास कर रहे हों, या अशुभ के लिए प्रयास कर रहे हो - पर हर मनुष्य में शुभ की अपेक्षा है। इस आधार पर मैं मानव जाति का पुण्य मानता है। मैंने जो पाया उसमें सर्व शुभ का सूत्र है, इसलिए मैंने अपने कार्यक्रम को मानव के पुण्य से जोड़ लिया। सर्वशुभ के लिए यह प्रस्ताव पर्याप्त है या नहीं इसको हर व्यक्ति अपने में जांचेगा। जरूरत होगा तो अपनाएगा, जरूरत नहीं होगा तो छोड़ देगा छोड़ देगा तो आगे और कोई अनुसंधान करेगा सर्व शुभ के लिए कोई दीवाल नहीं है किसी के लिए। यह बिल्कुल निर्विवाद बात है।

-श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (दिसम्बर २००८, अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2009/02/blog-post 8893.html

Scanned with AnyScanner

अनुभवगामी पद्धति

"अनुभव होने का प्रमाण व्यक्ति ही हो सकता है दूसरा कुछ हो नहीं सकता। अनुभव संपन्न होने के बाद मैंने सोचा हर व्यक्ति साधना तो करेगा नहीं। हर व्यक्ति के लिए साधना करने के लिए उद्देश्य ही नहीं बन सकता। हर व्यक्ति के लिए समाधि-संयम विधि से गुजरने के लिए संभावना भी नहीं है। इसकी आवश्यकता ही नहीं बनता तो सम्भावना भी नहीं बनता। ऐसा तय करने के बाद इस फल के लोकव्यापीकरण के लिए क्या विधि हो?

अनुभव मुलक विधि से व्यक्त होने और अनुभवगामी विधि से उसे पहचान लेने पर अध्ययन पूरा हो जाता है। ऐसा मैंने स्व-विवेक से सोचा इसमें किसी दूसरे का सलाह नहीं रहा और उस वर्तमान में कोई ऐसा घटना नहीं रहा जो मुझे ऐसा करने के लिए suggest करे, यह मैंने अपने स्व-विवेक से ही तय किया।"

श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (जनवरी २००७ अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2008/08/blog-post_09.html

परिभाषा विधि का महत्व

ऐसा प्रस्ताव विगत में कभी भी न होने के आधार पर इसे समझने की विधि क्या है? यह प्रश्न उठना स्वाभाविक रहा। इसका उत्तर है- परिभाषा विधि से यह पूरा अध्ययन होता है। परिभाषा अपने स्वरूप में भाषा में इंगित अर्थ को निर्देशित करने की प्रक्रिया ही है।

परिभाषा विधि आदर्शवादी विधि से भिन्न है। जैसे "धर्म" एक शब्द है। आदर्शवादी विधि में शब्द के आधार । पर ही व्याख्या है। धर्म शब्द के मूल में 'धृ' धातु है। धृ का मतलब – धारणा। इस तरह धर्म की व्याख्या करने पर धर्म पहनने वाला, ओढ़ने वाला, उतार कर फेंकने वाला भी हो गया। इस आधार पर धर्मांतरण संबंधी वाद-विवाद सदा से चलते आए परिभाषा विधि से धर्म को शाश्वत रूप में, निश्चित रूप में, निर्दिष्ट रूप में व्यक्त करना सम्भव हुआ। धर्म की परिभाषा दी "जिससे जिसका विलगीकरण न हो, वही उसका धर्म है।" इस परिभाषा से अस्तित्व की चारों अवस्थाओं का निरीक्षण-परीक्षण पूर्वक मानव का सुख-धर्मी होना, जीवों का आशा-धर्मी होना, पेड़-पौधों का पुष्टि-धर्मी होना, और पदार्थों को अस्तित्व-धर्मी होना अध्ययन किया जा सकता है।

श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (अप्रैल २००६, अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2009/11/blog-post_11.html

विगत की नयी व्याख्या करने की निरर्थकता

वैदिक विचार में (यजुर्वेद में) मैं कुछ २००-३०० ऋचाओं को पहचानता हूँ, जिनके आधार पर इस प्रस्ताव की पूरी व्याख्या की जा सकती है। लेकिन उस मार्ग को मैंने त्याग दिया। यदि इस तरह व्याख्या करने जाते तो अभी तक जितनी व्याख्याएं वेद-विचार पर हो चुकी हैं। उनके सिलसिले में यह प्रस्ताव भी जुड़ जाता। विगत की नयी व्याख्या करके इस प्रस्ताव को स्थापित नहीं किया जा सकता। इस तरह विकल्प का आधार नहीं बनता है.

इस बात को प्रस्तुत करने में पहली चुनौती थी, भाषा को कैसे प्रयोग किया जाए? १ का मतलब यह, २ का मतलब यह इस ढांचे खांचे में भी इस बात को प्रस्तुत किया जा सकता है, किन्तु ऐसा करने में भी कुछ - भाषा का प्रयोग होता ही इस आधार पर मैंने परिभाषा विधि को अपनाया हिंदी में तत्सम और तद्भव दो प्रकार की भाषा है, तत्सम भाषा का मैंने प्रयोग किया है। तत्सम भाषा में हमारे बुजुर्गों ने धातु के आधार पर ध्वनि दिया है, मैंने ध्वनि का परिभाषा कर दिया। हर मानव में कल्पनाशीलता सम्पदा रूप में पहचाना, उसके आधार पर तदाकार होता है पहचाना। उसके आधार पर अध्ययन का पूरा

Scanned with AnyScanner

ढांचा-खांचा बना दिया, और अपनी बात को प्रस्तुत कर दिया। इस प्रस्तुति के तीन ही अवयव है मेरा अनुभव, भाषा, और उसका परिभाषा, भाषा परंपरा की है, परिभाषा मेरी है.

मानव-चेतना को शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण किया जा सकता है। उसको लेकर हम अभी जहां तक किये हैं वह ठीक है या नहीं उसको आप को देखना होगा, शोध करना होगा। हर बात के लिए शोध ही एक मात्र विधि है। आपको स्वयम जांचना ही पड़ेगा। आपको किसी भी बारे में अपना मंतव्य देना है तो आपको उसे समझना ही होगा। प्रचलित परंपरा विधि से इस प्रस्ताव के बारे में मंतव्य प्रस्तुत करने का कोई तरीका ही नहीं है। इस प्रस्ताव से सहमत होना ही विगत परंपरा से जुड़ता है। और कुछ भी नहीं जुड़ता। जैसे आज के दंड संहिता रूपी संविधान से यह प्रस्ताव जुड़ ही नहीं सकती। आज की लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्मादी शिक्षा से यह प्रस्ताव जुड़ ही नहीं सकता।

यह विगत की सोच का विकल्प है

- श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (दिसम्बर २०१०, अमरकंटक)

https://madhyasth darshan.blogspot.com/2011/01/blog-post_21.html

विगत के प्रति कृतज्ञता

प्रश्न: आपकी प्रस्तुति में विगत के प्रति 'कृतज्ञता' किस रूप में है?

उत्तर: आदर्शवाद ने भाषा दिया - उसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता है। भौतिकवाद ने दूरसंचार दिया - उसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता है। विगत की सार बात को लेना है, और उसकी कमियों को पूरा करना है।

आदर्शवाद में रहस्य और भौतिकवाद में संघर्ष से हमारी सहमति नहीं है। आदर्शवाद में "रहस्य" से मुक्ति के लिए समाधान प्रस्तुत है। भौतिकवाद में "सुविधा संग्रह" (जिसके लिए संघर्ष होता है) से मुक्ति के लिए समृद्धि प्रस्तावित है।

मध्यस्थ-दर्शन की प्रस्तुति मानव की कल्पना से नहीं है। सारी मानव जाति की आज तक की सोच का सार निकाल लो फिर भी यह उससे निकलेगा नहीं।

- श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (अक्टूबर २०१०, अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2011/02/blog-post_25.html

अनुभव को बताया जा सकता है.

विगत में कहा गया था "अनुभव को बताया नहीं जा सकता।" मैं यहाँ कह रहा है अनुभव को ठोक-बजाऊ विधि से बताया जा सकता है। यदि शानदारी से बताने की कोई चीज है तो वह अनुभव ही है। इन दोनों में कितना दूरी है, आप ही सोच लो !

-श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (अगस्त २००६, अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2009/08/blog-post 6186.html

विकल्पात्मक अध्ययन प्रस्ताव

अनुभव करने वाली वस्तु के बारे में कौन अनुभव करेगा? यह बात विगत के अनुसार स्पष्ट नहीं रहा। विगत में "जीव" और "आत्मा' की बात की गयी है। जीव के हृदय में ब्रह्म स्वयं आत्मा के स्वरूप में बैठा है- ऐसा कहा गया है। इस विधि से जीव

Scanned with AnyScanner

अध्ययन करता है, या आत्मा अध्ययन करता है? यह प्रश्न बनता ही है। इस विधि से आत्मा के अध्ययन करने की बात युक्तिसंगत या तर्क-संगत हो नहीं पाती क्योंकि आत्मा को "अज्ञानी' कहना बनता नहीं है। जीव माया का स्वरूप है और माया का अध्ययन करने की तमीज से संपन्न होना सम्भव नहीं है। ऐसा तर्क हो जाता है। अब इस स्थिति में जीव और आत्मा के संयुक्त रूप में अध्ययन होने की चर्चा हो सकता है। शरीर को इस विधि में पञ्च भूतों का संयुक्त स्वरूप बता चुके हैं। पञ्च भूतों का भी अध्ययन जैसी चीज के लिए साधन होना तर्क-संगत नहीं लगता। इस लिए आदर्शवादी विधि से मानव में, मानव से, मानव के लिए अध्ययन की संभावना पर विश्वास करना बनता नहीं है। आदर्शवादी विधि से मनुष्य को सच्चाई का अध्ययन करने का अधिकार नहीं है। आदर्शवादी विधि से । सच्चाई को अध्ययन करने योग्य स्थिति परिस्थिति मनुष्य के साथ जुड़ा नहीं है। इसी क्रम में शास्त्रों में मनुष्य को 'अल्पज्ञ' कहा है संभवतः इसी संकट से कहाँ हो।

इस प्रकार आदर्शवादी विधि से मानव परम्परा के अथक प्रयासों के बाद भी अभी तक मानव सच्चाई को अध्ययन करने में असमर्थ रहा है।

आदर्शवाद के बाद जो भौतिकवाद प्रभावित हुआ, वह सर्व मानव में स्वीकार हुआ। लेकिन उसके बावजूद भौतिकवाद का सच्चाई से कोई लेन-देन नहीं रहा। दोनों विचारधाराओं के सच्चाई का अध्ययन न करा पाने से मानव-परम्परा सच्चाई से वंचित रहा।

इसी के साथ यह भी सर्वेक्षण में आता है आदर्शवाद ने शब्द, शास्त्र, और आप्त वाक्यों को "प्रमाण माना है, लेकिन मानव को "प्रमाण" का आधार नहीं माना। "आप्त-पुरुष" मानव से अतिदूर वाला वस्तु हो गयी। इस प्रकार कुछ और भ्रम जाल ही मानव-परम्परा को हाथ लगी।

मानव अपने यथा स्थिति में, अर्थात भ्रमित अवस्था में, अथवा जीव चेतना में जीते हुए स्थिति में भी "सच्चाई का प्यासा है। इस तथ्य का परीक्षण करने के लिए हम संवाद विधि से लोगों के साथ संभाषण कर सकते हैं। संभाषण करने में पूछने पर सच्चाई चाहिए या झूठ?" इसके उत्तर में सच्चाई के पक्ष में ९९% लोगों की सहमति है। सच्चाई के "प्रमाण के बारे में जब पूछा जाता है तो इसके उत्तर में कुछ प्रतिशत लोग कहते हैं- "सच्चाई मनुष्य-परम्परा में अध्ययन विधि से स्पष्ट नहीं हुआ।" अत्यल्प प्रतिशत लोग यह कहते हैं जीने के लिए सच्चाई आवश्यक नहीं है।" ऐसे सर्वेक्षण से पता चलता है मनुष्य- परम्परा में सच्चाई अध्ययन-सुलभ नहीं हुआ। इसी रिक्तता वश विकल्पात्मक विधि से यह सच्चाई के अध्ययन का प्रस्ताव प्रस्तुत है।

विकल्पात्मक अध्ययन प्रस्ताव में सर्व प्रथम मानव का अध्ययन जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में होता है। मानव सह-अस्तित्व सहज प्रकटन का प्रमाण है। मानव जीव संसार के समृद्ध होने के बाद ही प्रकट हुआ है। मानव जब से प्रकट हुआ है, जीव-चेतना विधि से ही जिया है। मानव के जीव चेतना विधि से जीने के कारण ही धरती बीमार हुई है। मानव अब पुनर्विचार की स्थिति में पहुँच चुका है यह मेरी मान्यता है। पुनर्विचार की स्थिति तो बन गयी है भले ही पुनर्विचार करने के लिए मानव जाति अभी तैयार न हुआ हो।

हर मानव सह-अस्तित्व में अध्ययन पूर्वक समझदारी से संपन्न होने योग्य इकाई है। हर नर-नारी का सह-अस्तित्व में अध्ययन पूर्वक पारंगत होना सम्भव है।

श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (अप्रैल २००६, अमरकंटक)

http://madhyasth-darshan.blogspot.com/2009/11/blog-post 1121.html

Scanned with AnyScanner

प्रेरणा और मार्गदर्शन

- राकेश, प्रियंका गुप्ता (बैंगलोर)

श्रद्धेय नागराज जी (१९२०-२०१६) जिन्हें हम स्नेह और आदर से बाबा जी कहते हैं। हमारे लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन के स्त्रोत हैं। इस लेख में हमने लिखने का प्रयास किया है कि उनसे हमें क्या प्रेरणा और मार्गदर्शन मिला। प्रमाण स्वरूप में जीते हुए व्यक्ति से प्रेरणा मिलती है, बाबाजी अनुभव सम्पन्नता के साथ प्रमाण स्वरूप में परिवार में जिस सहजता से जीते थे, वह उनके संपर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों के लिए प्रेरणादायी था। उनसे हमको अपने लिए समय समय पर मार्गदर्शन मिला है, जिस पर हम अग्रसर है.

नवंबर २००४ में हम पहली बार बाबाजी से अमरकंटक में मिलने गए। उन्होंने हमसे कहा 'देखो, मानव जब से धरती पर प्रकट हुआ तब से विश्वास ढूंढ रहा है, पर उसको विश्वास मिला नहीं। मैंने जो साधना-समाधि-संयम पूर्वक पाया है, उससे मुझे विश्वास समझ में आ गया और वो मैं आपको समझा सकता हूँ" यह सुन कर हमें ऐसा लगा कि हम यहीं तो ढूंढ रहे थे। उसके बाद जैसे हमारा मन उनसे जुड़ गया। उनसे मिलने का बारम्बार संयोग होता ही रहा और बात आगे बढ़ती रही.

अनुभव का प्रमाण जीने में है और जीना परिवार में होता है। जीने में प्रमाण से ही अध्ययन के लिए प्रेरणा मिलती है। बाबाजी के अनुभव प्रमाण को उनके परिवार में जीने के स्वरूप के साथ ही पहचाना जा सकता है। इस तरह बाबाजी के साथ-साथ उनके परिवार में सभी हमारे परिवार के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं

उपकार को केंद्र में रखते हुए उनके घर की व्यवस्था का स्वरूप बना था। उपकार का अर्थ है समझे हुए को समझाना सीखे हुए को सिखाना, किये हुए को कराना। अर्थात दूसरे व्यक्ति को अपने जैसा योग्य बनाना। बाबाजी हमेशा समझाने के लिए तैयार रहते थे। हम थक जाते थे, पर वो थकते नहीं उपकार के बदले में कोई प्रतिफल की उन्हें अपेक्षा नहीं थी। उपकार कार्य प्राथमिक और केंद्र में होते हुए उसके समर्थन और सहयोग हेतु घर के सारे काम चल रहे होते थे जैसे बच्चे स्कूल जा रहे हैं। उत्पादन की गतिविधियों चल रही हैं। आयुर्वेद चिकित्सा का कार्यक्रम है। दादा भैया और मुन्ना भैया अपने काम से बाहर जा रहे हैं, साधन मैया कुछ काम में लगे हैं, रसोई की व्यवस्था में अम्बा दीदी और भाभियाँ लगे है, आदि। बाबाजी से मिलने आये व्यक्तियों की जिज्ञासा शांत हो सके, उसके लिए उनको जो मदद चाहिए उसको उपलब्ध कराने के लिए सभी परिवार जनों में एक तत्परता देखने को मिलती थी। ज्ञानार्जन के लिए आये हर आगंतुक को उस घर में एक स्वागत भाव का अहसास होता था। समान रूप से सबका स्वागत रहता था, सभी को उस घर में एक अपनापन महसूस होता था। जितनी बार भी हमारा वहाँ जाना हुआ, हम वहाँ से उत्साहित हो कर ही लौटे, ऐसा लगा कि हम जागृति क्रम में एक कदम आगे बढ़े हैं.

बाबाजी की विद्वता के साथ माताजी की सेवा का योग अद्भुत था। सेवा के लिए यह स्वीकृति सभी परिवारजनों में परम्परागत रूप से स्वीकारी हुई दिखी। इस कर्तव्य का निर्वाह कई दशकों से बाबाजी का परिवार कर रहा है विद्वता केवल बोलने से प्रमाणित नहीं होती, विद्वता सेवा और श्रम के साथ ही प्रमाणित होती है यह वहाँ देखने को मिला। जीने देकर जीने की एक मिसाल वहाँ देखने को मिली। बाबाजी के परिवार में हरेक को अपनी गति से बढ़ने के लिए अवसर था, बाबाजी का व्यक्तित्व परिवार में सबके लिए पोषक ही दिखाई देता था, बाबाजी का ध्यान जैसे सभी और एक साथ बना रहता था। बच्चे पढाई में कैसा कर रहे हैं, गाड़ी की मरम्मत हुई कि नहीं, खेत में क्या काम चल रहा है, कोई बीमार है तो उसका क्या हाल है- बाबाजी के ध्यान से कुछ छूटा नहीं रहता था, केंद्रीय ध्यान का यह व्यवहारिक स्वरूप हमको समझ में आया। बाबाजी के साथ जीने में एक उत्सव का सा माहौल रहता था। वे खूब शौक से खाना खाते थे, बनाने वाली और परोसने वाली को भी बहुत अच्छा लगता था। वो अकेले खाना नहीं खाते थे। उनके साथ कई बार साथ बैठकर खाना या अनुभव के साथ जीना उत्सव है उदासीन बिल्कुल भी नहीं। इससे प्रेरणा मिलती थी हमारा परिवार भी ऐसे जी सकता है हर परिवार ऐसे जी सकता है यहाँ समाधान और समृद्धि है इससे अच्छा जीना क्या होगा? इससे कम में क्या काम चलेगा?

बाबाजी के साथ अनेक बार मिलने का संयोग हुआ, दर्शन की अवधारणाओं को समझने के साथ-साथ उनसे अपने परिवार के लिए मार्गदर्शन भी मिला। हर व्यक्ति की background, परिस्थिति, प्रवृत्ति और पूर्व संस्कार अलग-अलग होता ही है।

Scanned with AnyScanner

अतः लक्ष्य (समाधान-समृद्धि) सभी का एक ही होते हुए भी हर किसी के लिए एक ही मार्गदर्शन हो, यह आवश्यक नहीं है। बाबाजी सामने व्यक्ति की वस्तुस्थिति को ध्यान में रखते हुए उसका मार्गदर्शन करते है.

(१) साधन को साध्य न माना जाए

दर्शन के प्रस्ताव और उसके जीने के स्वरूप को देख कर मन किया कि तुरंत सब कुछ छोड़ो और इसके अनुसार जीने में शिफ्ट हो जाओ! लेकिन जल्दबाजी से कुछ हाथ लगता नहीं है। बाबाजी का मार्गदर्शन था- समझ के करो। यथास्थिति में संतुलन और विकास में प्रवृत्ति इसी विधि से जागृति -क्रम की सीढ़ियाँ लगी हैं। हम जहाँ हैं, वहीं से शुरू कर सकते हैं। समझने के लिए हर परिस्थिति अनकूल है। अभी जिस विधि से कमाते हो, उसको साधन माना जाए, साध्य नहीं। धीरे धीरे परिवर्तन किया जाए। जो आपकी जिम्मेवारियां हैं, उनको काट के, घायल करके जागृति के लिए आगे बढ़ने का कोई रास्ता नहीं है। यह एक woundless process है

(२) पेट भरने का जुगाड़ और मन भरने का जुगाड़

जैसे बाबा जी ने अपने जीने का स्वरूप बनाया था, उसी तरह उपकार को केंद्र में रखते हुए जीने का डिजाइन बनाने का उन्होंने मार्गदर्शन दिया। हर हालत में उपकार करना है। उनका कहना था पेट भरने का जुगाड़ और मन भरने का जुगाड़ इन दोनों को अलग अलग रखना ज्ञान व्यापार की वस्तु नहीं है। समझदारी से समाधान श्रम से समृद्धि इस डिजाइन में हमें आना है।"

(३) दर्शन का अंग्रेजी में अनुवाद

मध्यस्थ दर्शन वांग्मय को अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करने के लिए बाबाजी ने मार्गदर्शन किया। इसको करो- यह तुम्हारे समझने में सहायक होगा। समझ के ही दर्शन को दूसरी भाषा में कहा जा सकता है.जब भी उनसे मिलते थे, तुरंत पूछते थे कहाँ तक पहुंची नैय्या! दिन में कितने पेज कर लेते हो? पहली बार में perfect नहीं होगा। एक बार करो, फिर उसका सुधार करो.

(४) समानांतर विधि से समझना

बाबाजी हमारे परिवार को एक इकाई के रूप में देखते थे। हम दोनों को अलग अलग करके उन्होंने कभी नहीं देखा। परिवार में फूट डालने का हमारा कोई काम नहीं है परिवार के निर्णय आप दोनों को स्वयं लेना है, इसमें मेरा कोई हस्तक्षेप नहीं है, आप पति-पत्नी को समानांतर विधि से समझने की आवश्यकता है। आगे-पीछे हो तो झगड़ा होता है। मिलके समझो मिलके जियो.

(५) ऊर्जा संतुलन

बाबाजी की हमसे अपेक्षा थी कि हम देश में संतुलन को लेकर एक समय कार्यक्रम बनाएं। हर गाँव में चार इंजीनियर हो जो उस गाँव की भी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए काम करें। सौर ऊर्जा, वायु तरंग ऊर्जा प्रवाह बल, गैसीय ये सभी तकनीकियों का उपयोग हो।

बाबाजी का जो सान्निध्य में मिला, उसने हमारे जीवन को एक दिशा दी है। लक्ष्य भले ही दूर हो, पर सही मार्ग पर होने की आश्वस्ति है। उनके प्रति हमारा परिवार हमेशा कृतज्ञ रहेगा।

Scanned with AnyScanner

इस लेख के सन्दर्भ में बाबाजी के साथ हुए कुछ संवाद का reference:-

साधन और साध्य

कीचड़ में खड़े आदमी को पता लग गया कि यह कीचड है। इससे बाहर निकलना है, यह पता लग गया। बाहर निकलने का रास्ता अध्ययन है यह पता लग गया।

विचार मजबूत होते-होते इससे पार लगने का रास्ता खोज ही लेते हैं

वर्तमान में जैसे भी हैं, जैसे भी चल कर पहुंचे हैं, वर्तमान में हमारे पास जो कुछ भी हैं - उसको "साधन" रूप मैं माना जाए, "साध्य न माना जाए। इतना ही बात है।

साधन रूप मानने से हमारे बाहर निकलने का रास्ता बन जाता है साध्य मान लेने से हमारा बाहर निकलने का रास्ता बनता ही नहीं है। बाँध लग जाता है।

वर्तमान में उत्साहित कैसे रहे? हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह इससे आगे निकलने के लिए रास्ता बनाने के लिए कर रहे हैं न कि इसमें डूबने, और डूब कर मरने के लिए। इस बात को आप स्वीकार सकते हैं हर। व्यक्ति स्वीकार सकता है। क्योंकि हर व्यक्ति ५१% से अधिक सही है।

- श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (जनवरी २००७, अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2008/03/blog-post 4443.html

प्रश्न: आज की स्थिति में मैं नौकरी कर रहा हूँ, इस प्रस्ताव को सुनने पर वह मुझे "गलत" लगता है- क्योंकि मुझे लगता है मैं अव्यवस्था में भागीदार हूँ...

उत्तरः उसको अभी "गलत" या "सही" मत ठहराओ। यह पूरा नहीं पड़ रहा है इतना रखो। तृप्ति के लिए क्या हो सकता है, इसके लिए आपके पास सूचना आया समाधान-समृद्धि पूर्वक तृप्ति हो सकती है,

जिसके लिए दर्शन का अध्ययन पूर्वक ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्न होनी आवश्यक है.

अध्ययन से अनुभव पूर्वक ज्ञान-विवेक विज्ञान स्पष्ट हो जाता है। ज्ञान-विवेक-विज्ञान को जीने का डिजाइन समाधान-समृद्धि स्वरूप में मानवीयता पूर्ण आचरण स्पष्ट हो जाता है। उसको प्रमाणित करने के लिए अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। उसको लोकव्यापीकरण करने के लिए शिक्षा विधि स्पष्ट हो जाती है। इसको आचरण करने पर तृप्त रहना बन जाता है, समाधानित रहना बन जाता है, समृद्ध रहना बन जाता है.

- श्रद्धेय नागराज जी के साथ संवाद पर आधारित (जनवरी २००७, अमरकंटक)

https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2016/07/blog-post 97.html

Scanned with AnyScanner

समाधान की निरन्तरता

- श्री हिमांशु दुग्गड़

वैसे तो पूज्य बाबाजी का मेरे उपर उपकार को मैं समझ नहीं सकता, पर इतना पता है कि दया, कृपा, करुणा है। उनके कृपा से मेरे साथ सब शुभ ही घटित हुआ है। प्रथम कृतज्ञता दिवस के उपलक्ष में जो शुभ की आंशिक पहचान मेरे को हुई है उसको बताने कि इच्छा हुई। इस लेख का उद्देश्य मेरी उनके उपकार कि समझ को और गहरा करना है। अन्य मेरे गुरु भाई/बहन को इससे अगर प्रेरणा मिले तो उसका कारण पूज्य बाबाजी तथा उनके प्रेरणा को इमानदारी से स्वीकारे मेरे पुजनीय ज्येष्ठ गुरु भाई/बहन है। यह मेरा सौभाग्य है कि ऐसे श्रेष्ठ आचरण को मैं देख पाया। इसे मैं पूज्य बाबाजी की कोई विशेष कृपा समझता हूं। अपने अन्दर, इसके लायक, मेरे को ऐसे कोई गुण नहीं दिखे।

जब मैं पूज्य बाबाजी के पास अमरकंटक में रहने गया तब मेरे मन में बहुत लंबे समय तक वहां रहने के लिए बहुत शंकाएं थी। लगभग अंजान लोग, बिना बुलाए किसी के घर में ऐसे रहना, इत्यादि इत्यादि। मेरे जाने के कुछ दिन पश्चात बाबाजी ने पूछा,'कितने समय के लिए आये हो'। मैंने कहा बाबाजी जब-तक जाने को नहीं कहेंगे। पूज्य बाबाजी ने कुछ नहीं कहा। अगले दिवस प्रातः जब मैं बाबाजी के कमरे में उनको प्रणाम करने गया तब बाबाजी ने मुझे बैठने को कहा। फिर बड़े सहज तरीके से कहा कि तुमको हमने बहुत बारीकी से देख लिया है। तुम्हारे अन्दर हमें ऐसा कोई दोष नहीं दिखा जिसके कारण हमको तुमको जाने के लिए बोलना पड़े। तुम चाहो तो हमेशा के लिए हमारे यहां रह सकते हो। यह सुनकर मैं स्तब्ध हो गया। मेरे से इतनी बड़ी अपेक्षा। मैंने अपने आपको बहुत छोटा महसूस किया इस देवता के अपेक्षा के सामने। इस घटना से उस घर तथा परिवार से संकोच हट गया तथा मैं वहां लंबे समय रह पाया।

कुछ दिन पश्चात उन्होंने आदरणीय साधन भैया को मेरे सामने कहा कि वो जितना हो सके उतना मेरे साथ समय बिताएं। इसके बाद, आज तक मैं जब भी उनके पास जाता हूं, साधन भैया मेरे को बहुत समय देते हैं। शायद कुछ ज्यादा ही। उनके इस स्नेह से मैं कई बार लज्जा भी महसूस करता हूं। जब मैं उनके साथ रहता था तब मेरे को दिन भर चाय पीने की बहुत बुरी आदत थी। वहां पर चाय मांगने या रसोई में जाकर स्वयं बनाने में संकोच भी था। साधन भैया दिनभर मेरे को चाय पिलाते अपने हाथों से बनाकर या पुजा भाभी या अन्य परिवार की महिलाओं को बोलकर। स्वयं भी पीते। मेरे सामने ऐसा व्यवहार था कि जैसे वो भी मेरी तरह चाय के आदि हैं। मैंने कभी भी अपनी इस लत की चर्चा नहीं की। जब भी मैं बाबाजी के पास जाता, बाबाजी मुझे पुछते,'काफी पिया'। मैंने सोचा कि पूज्य बाबाजी दक्षिण भारतीय है इसलिए उनको काफी की मनवार की आदत है। मैं जड़तावश हर बार जवाब देता की मैं चाय पीता हूं। बाबाजी तुरन्त बोलते, 'अंबा (आदरणीय अंबा दीदी) को बोलो'। उनका आदेश पाकर मैं अंबा दीदी को कहता और वो बहुत सहजता से मुझे चाय बनाकर पिलाती। यह कार्यक्रम कई महिनों तक रोज चला। दिन में कई बार अंबा दीदी, साधन भैया, पुजा चाची तथा अन्य परिवार जन मेरे को चाय पिलाते। एक दिन मेरे मन में आया कि मैं क्या कर रहा हूं। मेरे को बहुत पश्चाताप हुआ। मैंने चाय पीना छोड़ दिया तथा दिन में दो बार काफी पीना आरंभ किया। काफी की भी कोई विशेष आदत नहीं है पर बाबाजी के दिये आदेश (तथा अपनी जड़ता) की स्मृति में उसे पीता हूं। इस घटना से मेरे अन्दर बहुत बड़ा एक परिवर्तन आया। मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया। मेरे को लगा कि मैं कुछ भी कर सकता हूं।

मेरे अमरकंटक जाने के कुछ दिन के बाद एक दिन अचानक पूज्य बाबाजी की सांस बहुत जोर से चलने लगी। लगभग ३ दिन तक उनको शारीरिक बहुत कष्ट रहा। रात दिन बाबाजी को एक जटिल दमे के मरीज की तरह सांस लेते हुए मैंने देखा। बहुत चिंता हुई। अंबा दीदी तथा साधन भैया सेवा पुरी कर रहे थे पर एकदम निश्चिन्त थे। मेरे को उनको देखकर बड़ा अचंभा हुआ। कोई खास इलाज करने का प्रयास भी नहीं किया गया। मेरे पुछने से साधन भैया ने बताया कि ऐसा बाबाजी को पहले कभी नहीं हुआ। उनको दमे की भी कोई शिकायत नहीं है। मेरे हिसाब से तो उनको तुरन्त रायपुर या अन्य बड़े डाक्टर के पास ले जाना चाहिए था। परिवार में सब एकदम निश्चिंत थे। तीसरे दिन अचानक बाबाजी एकदम स्वस्थ हो गये। उसके बाद भी पूज्य बाबाजी को मैंने यह रोग होते कभी नहीं देखा। बाबाजी के बीमारी में आदरणीय अंबा दीदी तथा साधन भैया को बहुत चिंतित (इस घटना के पूर्व तथा बाद में) भी देखा। मेरे लिए यह घोर अचंभा था। कुछ दिन पश्चात मैं पूज्य बाबाजी

Scanned with AnyScanner

को प्रणाम करके कहा आपको मेरे जैसे नालायक शिष्यों के कारण बहुत तकलीफ़ होती है। उन्होंने हाथ के इशारे से ना कहते हुए कहा,'हमारे लिए यही सहज है'। मेरे लिए यह वाक्य श्री कृष्ण के गीता में कहे 'यदा यदा हि धर्मस्य .....' से भी बड़ा था। मैं इतना गदगद हो गया तथा आज भी उस दृश्य को स्मरण करके मैं भावुक होता हूं। इस घटना के बाद मेरे को भय बहुत कम हो गया। खत्म तो नहीं कह सकता। एक विचित्र दुस्साहस (इस समय इसको यही संज्ञा दे सकता हूं) करने कि प्रवृत्ति अपने अन्दर देखी।

एक दिन अचानक पूज्य बाबाजी ने मुझे कहा कि अस्तित्व में समय नामक कोई वस्तु नहीं होती। समय मानवकृत है। इस वाक्य ने मुझे बहुत झंझोड़ दिया। उसके बाद मेरे अन्दर जो पहले उतावलापन था वह बहुत कम हो गया। लंबे प्लान करने कि प्रवृत्ति का उदय हुआ। सफलता के लिए उतावलापन कम हो गया। अस्तित्व की स्थिरता तथा जाग्रति की निश्चितता पर मेरा विश्वास बढ़ गया।

पूज्य बाबाजी के आदेश से मैं दर्शन रोज पढ़ता था। उन्होंने कहा कि तुम्हें जो प्रश्न है वह मुझे या साधन को पुछ सकते हो। मैं रोज उनको प्रश्न करता था तथा बाबाजी मेरे बचकाने प्रश्नों का बड़े धीरता से जवाब देते। कुछ दिन पश्चात मैंने देखा कि मेरा आज का प्रश्न का उत्तर आगे उसी किताब में है। मेरे को समझ आया कि ये प्रश्न मेरी विद्वता या जिज्ञासा का नहीं पर मेरे अन्दर का कोलाहल है। मैंने बाबाजी से यह स्वीकार किया तथा आज्ञा मांगी कि क्या मैं अब मेरे प्रश्न साधन भैया से कर सकता हूं। बाबाजी ने आशीर्वाद दिया। उसके बाद मेरे को ऐसा लगा कि मेरे प्रश्न जब भी आते हैं तब कोई न कोई संयोग से अनायास तरीके से उत्तरीत हो जाते हैं। पूज्य बाबाजी के बताये कार्य को करते रहने से बहुत बड़ी वस्तु सहजता से अपने अन्दर स्वीकृत होते देखा। सहअस्तित्व के ऊपर विश्वास बढ़ा तथा दिव्य मानव के उपकार (दया, कृपा, करुणा) कि असीमता का भास हुआ। बाबाजी के वांग्मय के रचना में जो घोर विद्वता का उपयोग हुआ है उसका भास हुआ।

एक बार मैंने पूज्य बाबाजी को कहा कि मैं तो एक उद्दंड शिष्य हुं। उन्होंने बड़ी सहजता से कहा उसमें क्या आपत्ति है। कुछ दिन बाद में उन्होंने कहा कि संसार में जितनी गलती करने कि क्षमता अजागृत मानव में है उससे अधिक उनमें क्षमा है। इसलिए वो उनकी गलती से अप्रभावित है। ऐसे महान व्यक्तित्व के होते अब भूल करना भी बहुत मुश्किल है।

पूज्य बाबाजी से मिलने से पहले मैं जिस पवित्रता को सर्वश्रेष्ठ मानता था वो मैंने आदरणीय अंबा दीदी में देखी। उनके आचरण को देखकर मेरे अन्दर पूज्य माताजी के प्रति श्रद्धा बड़ी। मैंने पूज्य माताजी के शरीर से सिर्फ एक बार दर्शन किया है। वह भी कुछ मिनट के लिए। मैंने प्रणाम करके अज्ञानतावश आशीर्वाद मांगा। पूज्य माताजी ने कहा कि बच्चों के लिए माता का आशीर्वाद सदा रहता ही है। उनकी यह अनन्यता देखकर मैं धन्य हो गया। अभी कुछ सप्ताह पुर्व जैन परंपरा के अनुसार क्षमा याचना के दिन मैंने क्षमा याचना का एक मैसेज मानव तीर्थ के ग्रुप में भेज दिया। आदरणीय अंबा दीदी ने इसे देखा। अंबा दीदी को बहुत चिंता हो गयी की हिमांशु से ऐसी क्या गलती हो गयी की उसे क्षमा मांगनी पड़ी। मेरे को यह समझ में आया की बड़प्पन क्षमा मांगने में नहीं है, गलती नही करने में है। आदरणीय अंबा दीदी को भी मेरे से बहुत ज्यादा अपेक्षा है यह समझ आया। यह बड़ी अपेक्षा ही उनका आशीर्वाद है तथा मेरे आगे बढ़ने का आधार है।

पूज्य बाबाजी के परिवार में सब लोगों को इस बात में बहुत रुचि देखी की आपने भोजन किया कि नहीं, आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं इत्यादि। आप क्या करते हैं, अथवा आप कितना कमाते हैं उससे उनको कोई सरोकार नहीं है। सब चुपचाप सेवा में लगे हुए हैं। उनके दोनों सुपुत्र मेहमानों के बाद वर्षों तक अपना भोजन करते। पूज्य बाबाजी के शरीर जब-तक था तब-तक दोनों भाइयों को मैंने डाइनिंग टेबल पर भोजन करते नहीं देखा। अपने कमरे में या रसोई में जमीन पर बैठकर भोजन करते ताकि मेहमानों को कोई तकलीफ़ नहीं हो। घोर सेवा, घोर श्रम उन सब में मैंने देखा। कार्य (बहुत सारे) में इतनी दक्षता की अगर उनमें से कोई लाभोन्मादी तरीके से सोचे तो इतना धन संचित करले की उसकी कोई सीमा नहीं।

सबसे इतना घनिष्ठता होते हुए भी बच्चों के लिए मेरे मन में एक संकोच था। मेरे को लगा कि नयी पीढ़ी हम पुराने सोचवालों से खुश शायद न हो। एक दिन पूज्य बाबाजी ने अपनी एक पोती को मेरी और इशारा करके कहा कि इससे कुछ सिखों। मैं पानी-पानी हो गया। मेरे को मेरी ग़लती समझ में आयी। उसके बाद मेरे अन्दर बच्चों के लिए एक अलग स्नेह का उदय हुआ। उनकी छोटी-छोटी उपलब्धियों में मुझे बहुत गौरव होने लगा। यह मेरे को सब युवाओं के साथ महसूस हुआ। इससे पूर्व मेरा अपने से छोटों से कभी बहुत आत्मीयता नहीं रही। इसके बाद यह बढ़ी तथा शिक्षा के क्षेत्र में मेरे काम में यह

Scanned with AnyScanner

आधार है। मेरी अपनी संतान से भी मेरे संबंध में एक नया आयाम आया। बहुत छोटे बच्चों के साथ व्यवहार में आज भी मैं कमजोर हूं। इसमें आगे सुधार बाबाजी करेंगे।

भौतिक आयाम को पूज्य बाबाजी ने कभी गौण नहीं किया। खेती, गौपालन, दवा, उद्योग कपड़ा, मकान, टेक्नोलॉजी इत्यादि पर उन्होंने खुब लंबी चर्चा तथा मार्गदर्शन अनेक बार बहुत लोगों को किया। एक बार उन्होंने बताया कि साधना काल में अमरकंटक में बहुत सारी नवीन औषधियां यहां होने लगी। पंजा शालम का उन्होंने उद्धारण दिया। मुझे पता था कि पंजा शालम हिमालय के भी बहुत मुश्किल में होता है। अफगानिस्तान, इरान तथा अन्य देशों में होता है। इससे मुझे यह विश्वास हो गया कि देवता के होने मात्र से प्रकृति के सारी इकाइयां प्रफुल्लित हो जाती है। अज्ञानतावश हमारे जीवन इस दिव्य प्रेरणा को अस्वीकार कर सकते हैं किन्तु जड़ प्रकृति इनसे अछूती नहीं रह सकती। उपकार का भाव बहुत बड़ी वस्तु है तथा यही अजागृत के जागृति का आधार है। गुरु के महत्व समझ में आया। उत्पादन तथा प्राकृतिक ऐश्वर्य को आगे बढ़ाना अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग है। एक दूसरे के साथ पूरक होना अति आवश्यक है। अन्य मानव से कोम्पटिशन करना अपराध है।

पूज्य बाबाजी के शरीर यात्रा का एक-एक क्षण संपूर्ण दर्शन है। उनको अभिव्यक्त होने के लिए वांग्मय की रचना की आवश्यकता नहीं थी। शिक्षा में लाने के लिए तथा इस पृथ्वी के मानव कि आवश्यकता (हम तर्क को सर्वोपरि मानते हैं) की पूर्ति हेतु पूज्य बाबाजी यह कार्य किया। यह उनके लिए सहज था, इससे यह प्रमाणित होता है कि वो सदा विश्राम में है। अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था इस पृथ्वी पर होगी। इस पृथ्वी का हर मानव के गुरु, दादागुरु, पर-दादागुरु इत्यादि एक दिन पूज्य बाबाजी होंगे।

उन्होंने क्या-क्या दिया है यह पूरा समझना बहुत मुश्किल है। बहुत दिया है यह पता है। अभी भी निरंतर कृपा बरसा रहे हैं यह समझ में आता है। इस कृपा को ग्रहण करने में पात्रता की कमी है यह पीड़ा है। हम सब इस पृथ्वी के मानव को यह मिल रही है। यह कृपा इस पृथ्वी का उद्धार करेगी तथा यह धरा स्वर्ग बनेगी। इसका ऋण हम चुका नहीं सकते। कृतज्ञता ही रख सकते हैं।

Scanned with AnyScanner

मार्गदर्शन के अधिकारी

- श्री बालमुकुंद

मैं अपने में इसे देख पाता हूँ कि अभी वर्तमान में मेरे अंदर विश्वास का आधार एक प्रमाणित व्यक्ति के रूप में बाबाजी ही हैं। जब तक स्वयं में विश्वास पूर्ण न हो जाये, बाबाजी के साथ सान्निध्य एक बड़ी ताकत बनी हुई है। इसके एक संस्मरण के रूप में यह बात विशेष रूप से दिखाई देती है।

एक बार बाबाजी के साथ संवाद के दौरान बाबाजी ने कहा," हम तुम पर विश्वास करता हूँ क्यूंकि तुम बिटिया (विधि) के साथ हो। " कह कर वे रुक गए। मैं अमरकंटक में अपने निश्चित कमरे में चला गया। मन में मैं काफी परेशान था। मेरी श्रीमती (विधिजी) ने मेरी मनः स्थिति का अनुमान लगाया और कहा की बाबाजी हम पर कितना विश्वास करते हैं ना। मैंने कहा की हाँ..... करते हैं आप पर तो विश्वास करते ही हैं, मुझपर तो आपकी वजह से ही विश्वास करते हैं।

इस पर विधिजी ने कहा की मुझे ऐसा नहीं लगता है, आपको उनसे दुबारा बात करनी चाहिए।

मैं बाबाजी के पास वापस गया और हिम्मत करके बाबाजी से पुछा कि बाबाजी मुझ पर आप सीधे सीधे विश्वास कर पाएं, इसके लिए मुझे क्या करना होगा।

बाबाजी ने कहा,"हम तुम पर विश्वास करता हूँ। "

मैंने कहा,"बाबाजी आप विधिजी की वजह से मुझ पर विश्वास करते हैं। "

इस पर बाबाजी ने कहा,"विश्वास ऐसे ही होता है। "

मैं कुछ बोला नहीं।

संभवतः मेरी परेशानी को वे समझे गए।

वे आगे बोले, "विश्वास परस्परता में ही होता है। तुम पर बिटिया की वजह से विश्वास करता हूँ, और बिटिया पर तुम्हारी वजह से विश्वास करता हूँ। "

मैं अपने अंदर विश्वास को महसुस कर रहा था, और विधि की तरह ही खुश हो रहा था कि बाबाजी हम पर विश्वास करते हैं। मैं विधिजी के लिए मन में धन्यवाद भी ज्ञापित कर रहा था, कि बाबाजी से दुबारा पूछ लिया,नहीं तो मैं एक गलत निष्कर्ष को लेकर जिंदगी भर के लिए परेशान हो जाता।

बाबाजी इसके लिए पूरा अवसर बनाये रखते थे की शिष्य अपनी भी कल्पनाशीलता लगाए, ना कि सीधे सीधे मान ही ले, यह भी मुझमें और पुष्ट हुआ।

पर मेरे मुख मुद्रा पर थोडी जिज्ञासा थी, मैं विश्वास के इस नए सह-अस्तित्ववादी आयाम को थोड़ा और समझना चाह रहा था।

बाबाजी ने आगे व्यक्त किया -" विश्वास ऐसे ही होता है। बाप को देखकर बेटे पर विश्वास होता है, बेटे को देखकर बाप पर विश्वास होता है, भाई को देख कर भाई पर विश्वास होता है, मित्र को देखकर मित्र पर विश्वास होता है। "

मैं विश्वास के इस नए और गहरे पहलु को ग्रहण करने कि अभी कोशिश ही कर रहा था,

की आगे बाबाजी ने कहा " गुरु को देखकर शिष्य पर विश्वास होता है, और शिष्य को देखकर गुरु पर विश्वास होता है। हमारे बाद तुमको देखकर ही दुनिया पहचानेगी, इनका गुरु कैसा रहा होगा। इसको ध्यान रखना। "

मैं स्तब्ध रह गया।

Scanned with AnyScanner

बाबाजी ने जोर से कहा -"समझ आया ?"

मैंने कहा -" जी बाबाजी। "

बाद मैं शाम को अमरकटंक के प्राकृतिक वातावरण में टहलते हुए, मैं महसूस कर रहा था कि बाबाजी ने कितनी बड़ी जिम्मेदारी दे दी है हम सभी को,जो भी बाबाजी से मिल पाए हैं। और इसके लिए कितना विश्वास भी व्यक्त किया हमारे ऊपर। शिष्य होना भी अपने आप में कितनी बड़ी जिम्मेदारी होती है, मुझे पहली बार महसूस हुआ।

मैं यह सोचकर थोड़ा हल्का भी महसूस कर ही रहा था कि अभी तो बाबाजी हैं ही, कम से कम अभी तो बाबाजी का अनुमान, मुझे देखकर कोई नहीं लगा रहा है। उस समय बाबाजी के जाने का कोई अनुमान मैं लगाना भी नहीं चाह रहा था। मैं अपने को शायद हल्का ही कर रहा था। अछोटी में शिविर की जिम्मेदारी लेकर हम बाबाजी का ही तो परिचय दे रहे हैं, यह जिम्मेदारी का मुझे अच्छे से आभास हो रहा था।

बाबाजी के शरीर से जाने के बाद मुझे ऐसा कई बार स्मरण होता है, और मैं इस जिम्मेदारी और विश्वास से भर जाता हूँ, कि बाबाजी मुझसे और हम सभी से कितनी अपेक्षा करते रहे। साथ ही यह भी ध्यान आता है कि बाबाजी परम्परा बनने को कितना महत्व देते रहे। खुद को स्थापित करना उनका लक्ष्य नहीं रहा। आगे की पीढ़ी को आगे बढ़ाना ही उनका लक्ष्य रहा।

Scanned with AnyScanner

करुणा का भाव

- श्रीमती विधि

बाबाजी के साथ,जब भी मेरा सत्संग होता रहा,उन्होंने मुझे ध्यान दिलाया कि मुझे तय करना है कि मैं विद्यार्थी की जगह से "जिज्ञासा" पूछ रही हूं या फिर मैं समझी हूं और प्रमाण के साथ जीकर उनसे "प्रश्न" पूछ रही हूं।

कई बार, "जिज्ञासा" शब्द की जगह पर "बाबा जी मेरा एक प्रश्न है", ऐसा पूछ बैठती थी। बाबा जी बिना थके,संवाद को तभी शुरू करते थे जब मैं अपना सत्यापन रख देती थी,कि मैं सकारात्मक जगह से,समझने के लिए पूछ रही हूं यानी "जिज्ञासा" कर रही हूं। यह मेरे अध्ययन का पहला घाट रहा।

अध्ययन की प्रक्रिया में,शब्द से अर्थ,अर्थ से वस्तु की दिशा में, मैंने नागराज जी (बाबाजी) से पूछा,"पढ़ते पढ़ते मेरा ध्यान भटक जाता है। इसका कोई समाधान है क्या?उन्होंने कहा,"हां।

समाधान के लिए, परस्पर विश्वास के लिए, अभय के लिए और सहअस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए पढ़ रही हूं, ऐसा बार बार स्मरण में लाओ। यह मेरे अध्ययन में दूसरा घाट रहा।

अध्ययन के क्रम में अनेक घाट आए। एक बार मैंने बाबाजी को कहा कि आप जो कहते हैं, वह मुझे याद नहीं रहता है। उन्होंने कहा,"जब सुनते हो तो लिखा मत करो"। मुझे यह सुन बड़ा ही अचंभा हुआ। मैं लिखूंगी नहीं तो स्मरण में कैसे आयेगा। बाबाजी ने कहा, अबकी बार हमारे साथ सत्संग में आप कॉपी पेन लेकर मत बैठिएगा। मैंने बाबाजी की बात मान ली और पूरे दस दिन,सुनती रही। दस दिन बाद,मुझे उनकी बात स्मरण में आने लगी।

कुछ महीनों बाद, बाबाजी ने मुझे कहा,"जीने के लिए पढ़ो"। इस बात को उन्होंने दोहराया। मुझे उनकी यह बात स्वीकार हो गई।

अभी अध्ययन की यात्रा में एक और घाट आना बचा था।

एक बार मैंने स्वेच्छा से, नागराज जी के समक्ष प्रतिज्ञा ली कि "इस शरीर यात्रा में, मैं अनुभव करूंगी"।

दो महीने के पश्चात, बाबा जी ने मुझसे सीधा एक सवाल पूछा। "अनुभव करना है या नहीं? "

मैंने भी उनको सीधे सीधे उत्तर दिया, "हां बाबा जी अनुभव करना है।" आगे बाबा जी ने दोबारा ज़ोर से पूछा। "अनुभव करना है या नहीं?" मैंने भी ध्वनि से ध्वनि मिलाते हुए उत्तर दिया, "हां, बाबा जी अनुभव करना है।"

इस घटना को मैंने स्मरण के किसी कोने में रख दिया।

2016 में बाबा जी का शरीर शांत हो गया। छः साल बाद,एक दिन, दिल्ली में मैं गाड़ी की सामने वाली सीट पर उदास बैठी थी। उसी वक्त, एकदम से वही घटना मुझे स्मरण हुई। "अनुभव करना है या नहीं?"

मुझे उस क्षण, ऐसा लगा कि मैं वही विद्यार्थी हूं जिसने अध्ययन के पहले, दूसरे, तीसरे, अनेक घाट को पार किया है।

बाबाजी, भी वही गुरु हैं, जिन्होंने अनेक घाट पार लगाने में मार्गदर्शन दिया है। साल बीत जाएं, जगह बदल जाए, गुरु शिष्य संबंध, वही रह जाता है, कभी बदलता नहीं है। गुरु शिष्य संबंध में वो ताकत है, जिससे बाकी सभी संबंध एकसूत्र हो जाते हैं, ऐसा मुझे समय समय पर दिखाई दिया।

इससे जुड़ी एक घटना याद आ रही है। एक बार अमरकंटक में, अनुभव शिविर में, मैं और बालमुकुंद जी आए थे। उत्सव का समापन हो चुका था और सभी अपने घर जा रहे थे। मैं खाना परोसने के पश्चात खुशी खुशी बाबाजी से मिलने आई।

बाबाजी ने पूछा,"बिटिया,आपको अनुभव कब होगा?"। मैं ने तपाक से बोला," बाबाजी पहले की बात और थी, अभी न मेरा विवाह हो गया है। अभी अनुभव मुश्किल है, थोड़ा ज्यादा टाइम लगेगा।

Scanned with AnyScanner

बाबाजी ने उत्तर दिया,"आप दोनों एक दूसरे के साथ अच्छे से जी लेंगे, तो अनुभव हो जायेगा।" फिर मैंने बोला,"ठीक बात है बाबाजी, मेरा अनुमान है कि एक साल तो नहीं, मेरे हिसाब से दो साल में हो जायेगा।"

बाबाजी बोले,"एक मकर संक्रांति के बाद दूसरी मकर संक्रांति में आप अनुभव की घोषणा करेंगी।"

मैंने उत्तर दिया," हां "

अभी तो कई मकर संक्रांति गुज़र चुकी हैं। बाबाजी का शरीर भी शांत हो चुका है।

गुरु शिष्य संबंध वैसा का वैसा ही है। संबंध में ली गई प्रतिज्ञा भी वैसी की वैसी ही है।

Scanned with AnyScanner

न्यायकारी ध्यानाकर्षण

- श्रीमती विधि

There was a beautiful waterfall, surrounded by forests of bamboo and towering trees. The wind was densely cool. A car wound its way through the curves and twists of the mountain. I was in the car, my head was reeling from nausea. I was anxious to meet my grandpa teacher.

After a while, the driver, started playing loud music. I requested him to lower the volume. He was a kind man and immediately cooperated with me. He mentioned to me that he had known her teacher since his own childhood days.

I arrived at my destination and hauled my heavy suitcase into the foggy entrance. My hands were cold in the month of February. I felt strange and awkward inside, a mix of enthusiasm and fear. I felt victorious outwardly but felt under-confident within. I walked inside, greeted everyone, and then approached my grandpa teacher.

He welcomed me warmly. The teacher-student bond was very strong and pure. The grandpa teacher was a mentor to all the students who came to study his philosophy, Madhyasth Darshan Coexistentialism that he had propounded. It was normal for the teacher's family to have students pouring in to meet him. Each member of the family was welcoming. Amba didi was the epitome of hard work and seva. The whole family resonated in her guidance. Amba didi's father was the Grandpa teacher, who was also a famous person, namely, A. Nagraj, living in Madhya Pradesh (India). I myself was a student of this philosophy.

I was nervous that day. The real reason was my decision to get married. I was in my thirties and my grandpa was in his nineties. The age gap was sixty years. I didn't know how he was going to respond. Although I knew my fear was baseless yet I was anxious.

I sat next to him and started reading one of his books. After some time, my phone rang. It was a call from my fiancé-to-be (Balmukund ji). He told me about a conversation he had with an acquaintance. During the conversation, the acquaintance began discouraging my fiance-to-be (Balmukund ji), claiming that it was not a wise decision to marry me, since I was a reader of this particular philosophy. Hearing this, I was shocked. However, my fiance-to-be (Balmukund ji) did not get discouraged. He said, "I want to marry her because she is studying this particular philosophy, based on Truth."

I knew Balmukund ji was an unbiased person. After some time, I said goodbye to him and returned to where I was seated. Yet, I found myself unable to concentrate on the book I was holding in my hand. I wasn't at peace within.

Scanned with AnyScanner

The grandpa teacher was reading a newspaper. I decided to address my internal conflict. I asked him, "What do you do when somebody thinks low of you?" He looked at me and replied, "There are many people who think low of me. I express myself less than what I consider myself to be capable of."

This answer stopped my old track of angry thoughts. I repeated his words in my mind, "I express myself less than what I am capable of."

Finally, the day came for me to leave. The car was waiting at the gate. I grabbed my bag, went to meet the teacher and said, "I am leaving. I will be back in a few days. I came to say something to you, but having a conversation with my older brother, Sadhanji, I think I should come back later and then say. I will return soon." It was time to go.

As I walked towards the open door, I heard his voice. I turned around and looked at him. Grandpa's eyes were shining bright with happiness. He said, "See, where you were and where you have reached now."

Tears filled my eyes and my throat felt choked. I realized that he understood me. Within, I exclaimed, "Grandpa understands me. He understands me."

As I walked past the garden towards the gate of the house, thanking the whole family for taking good care of me, i was filled with gratitude.

Having earned the trust of my teacher and my older brother, Sadhanji I walked out confident and stepped into the car with grace. I waved "goodbye" to the teacher's family. Sitting in the rented car, I travelled through the mountainous jungle. I was confident, fearless, and crystal clear about life. I was ready to take the plunge, the plunge into marriage.

Scanned with AnyScanner

चरित्र चित्रण

पूज्य श्री ए. नागराज जी के बहुआयामी व्यक्तित्व के कुछ संस्मरण

प्रथम कृतज्ञता दिवस

कार्तिक पूर्णिमा, 27 नवंबर 2023

मानव तीर्थ, किरीतपुर, छ. ग.

Scanned with AnyScanner